श्रीलोकमात्रे नमः ।

श्रीमहालक्ष्म्युपाख्यान ।

श्रीदेवीभागवतमहापुराणान्तर्गत ।

मुरादाबाद निवासी पं० ज्वालाप्रसादजी-
शर्मकृतभाषाटीकासमेत ।

इसको
सर्व स्त्री पुरुषजनोंके लाभार्थ-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापेखानेमें
मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने मालिकके लिये
छापकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९८१, शकाब्दाः १८४६.

कल्याण-मुंबई.

॥ श्रीः ॥



लक्ष्मीर्मां करवीरवासनिरता श्रीमन्नृसिंहप्रिया
भक्ताभीष्टसमर्पणैकनिपुणा कारुण्यवारांनिधिः ॥
योगध्यानपरायणप्रियगणप्रेमप्रमोदप्रदा
नित्यं पातु करोतु सिद्धिममलामारब्धकार्ये मम ॥ १ ॥

श्रीलोकमात्रे नमः ।

श्रीमहालक्ष्म्युपाख्यान.

भाषाटीकासमेत.



प्रथमोऽध्यायः १.

नारद उवाच ।

श्रीमूलप्रकृतेर्देव्यागायत्र्यास्तुनिराकृतेः ॥
सावित्रीयमसंवादेश्रुतंवैनिर्मलं यशः ॥ १ ॥

भा०टी०-नारदजी बोले श्रीमूलप्रकृति तारिणी गायत्री देवीके माहात्म्ययुक्त निर्मल यश सावित्री और यमके संवादमें श्रवण किया ॥ १ ॥

तद्गुणोत्कीर्तनंसत्यंमंगलानां च मंगलम् ॥
अधुनाश्रोतुमिच्छामिलक्ष्म्युपाख्यानमीश्वर ॥२॥

भा०टी०-तथा उनके सत्यरूप गुणोंका कीर्तन जो मंगलोंका मंगल है सो सुना, हे भगवन् ! अब महालक्ष्मीका उपाख्यान सुननेकी इच्छा करता हूं ॥ २ ॥

केनाऽऽदौपूजितासाऽपिकिंभूताकेनवापुरा ॥
तद्गुणोत्कीर्तनंमह्यंवदवेदविदांवर ॥ ३ ॥

भा०टी०—प्रथम किसने उनका पूजन किया है वह किस प्रकारकी है ? हे वेदविदांवर ! मुझसे आप उनके गुणोंका कीर्तन कीजिये ॥ ३ ॥

नारायण उवाच ।

सृष्टेरादौपुराब्रह्मन्कृष्णस्यपरमात्मनः ॥
देवीवामांशसंभूताबभूवरासमंडले ॥ ४ ॥

भा०टी०—नारायण बोले हे नारदजी ! सृष्टिकी आदिमें परमात्मा कृष्णकी वाम अंससे रासमंडलमें यह देवी प्रगट हुई है ॥ ४ ॥

अतीवसुंदरीश्यामान्यग्रोधपरिमंडिता ॥
यथाद्वादशवर्षीयाशश्वत्सुस्थिरयौवना ॥ ५ ॥

भा०टी०—यह अतिसुन्दरी श्यामा न्यग्रोधपरिमंडित अथवा द्वादशवर्षकी अवस्थासे सम्पन्न निरन्तर स्थिरयौवनवाली ॥ ५ ॥

श्वेतचंपकवर्णाभासुखदश्यामनोहरा ॥
शरत्पार्वणकोटींदुप्रभाप्रच्छादनानना ॥ ६ ॥

भा०टी०—श्वेतचम्पकके वर्णकी समान सुखदश्या परममनोहर शरत्की पूर्णिमाके कोटिचन्द्रके प्रभाकी समान मुखवाली ॥ ६ ॥

शरन्मध्याह्नपद्मानांशोभामोचनलोचना ॥
सादेवीद्विविधाभूतासहसैवेश्वरेच्छया ॥ ७ ॥

भा०टी०—और शरत्के मध्याह्न कमलोंकी शोभा-को जिनके लोचन मोचन करनेवाले हैं वह देवी सहसाही ईश्वरकी इच्छासे दो रूप हुईं ॥ ७ ॥

स्वीयरूपेणवर्णेनतेजसावयसात्विषा ॥
यशसावाससाकृत्याभूषणेनगुणेनच ॥ ८ ॥

भा०टी०—अपना रूप, वर्ण, तेज, वय, कान्ति, यश, वसन, कृति, भूषण, गुण ॥ ८ ॥

स्मितेनवीक्षणेनैवप्रेम्णावाऽनुनयेनच ॥
तद्वामांसान्महालक्ष्मीर्दक्षिणांसाच्चराधिका ॥९॥

भा०टी०—स्मितवीक्षण प्रेम अनुनयमें राधाकी समानही थी. उन कृष्णके वामअंससे महालक्ष्मी और दक्षिण अंससे राधिका प्रगट हुईहै ॥ ९ ॥

राधाऽऽदौवरयामासाद्विभुजंचपरात्परम् ॥
महालक्ष्मीश्चतत्पश्चाच्चकमेकमनीयकम् ॥ १० ॥

भा०टी०—राधाने प्रथम द्विभुज परात्पर देवको वरण किया, महालक्ष्मीने पश्चात् उन मनोहरकी इच्छा की ॥ १० ॥

कृष्णस्तद्गौरवेणैवाद्विधारूपोबभूवह ॥
दक्षिणांसश्चद्विभुजोवामांसश्चचतुर्भुजः ११॥

भा०टी०—तब कृष्ण राधाके गौरवसे दो रूप हुए दक्षिणांससे द्विभुज और वाम अंससे चतुर्भुज हुए ११॥

चतुर्भुजायाद्विभुजोमहालक्ष्मींददौपुरा ॥
लक्ष्यतेदृश्यतेविश्वंस्निग्धदृष्ट्याययानिशम् १२॥

भा०टी०—द्विभुज भगवान्ने महालक्ष्मीको चतुर्भुजके निमित्त दिया, जिससे यह सब जगत् निरन्तर स्निग्ध दृष्टिसे दीखताहै ॥ १२ ॥

देवीभूताचमहतीमहालक्ष्मीश्चसास्मृता ॥
राधाकान्तश्चद्विभुजोलक्ष्मीकान्तश्चतुर्भुजः १३ ॥

भा०टी०–और जो महती देवी है इसी कारण महालक्ष्मी कहाती है. राधाकांत द्विभुज और लक्ष्मीकांत चतुर्भुज हैं ॥ १३ ॥

शुद्धसत्त्वस्वरूपाचगोपैर्गोपीभिरावृता ॥
चतुर्भुजश्चवैकुंठं प्रययौ पद्मयासह ॥ १४ ॥

भा०टी०–वह शुद्धसत्त्वस्वरूपवाली गोप और गोपियोंसे आवृत है चतुर्भुज लक्ष्मीके सहित वैकुंठमें गये ॥ १४ ॥

सर्वांशेनसमौतौद्वौकृष्णनारायणौपरौ ॥
महालक्ष्मीश्चयोगेननानारूपाबभूवसा ॥ १५ ॥

भा०टी०–वह कृष्ण और विष्णु सर्वांशमें समान है महालक्ष्मीके योगमें वह अनेकरूपा हुई ॥ १५ ॥

वैकुंठेचमहालक्ष्मीःपरिपूर्णतमारमा ॥
शुद्धसत्त्वस्वरूपाचसर्वसौभाग्यसंयुता ॥ १६ ॥

भा०टी०–वैकुंठमें महालक्ष्मी परिपूर्णतमा रमा है शुद्धसत्वस्वरूपा सर्व सौभाग्यसे संयुक्त है ॥ १६ ॥

प्रेम्णासाचप्रधानाचसर्वासुरमणीषु च ॥
स्वर्गेषुस्वर्गलक्ष्मीश्चशक्रसंपत्स्वरूपिणी ॥ १७॥

भा०टी०–वह सब स्त्रियोंमें प्रेमसे प्रधान है स्वर्गोंमें स्वर्गलक्ष्मी इन्द्रके सम्पत्स्वरूपिणी है ॥ १७ ॥

पातालेनागलक्ष्मीश्चराजलक्ष्मीश्चराजसु ॥
गृहलक्ष्मीर्गृहेष्वेवगृहिणांचकलांशतः ॥ १८॥

भा०टी०–पातालमें नागलक्ष्मी राजाओंमें राजलक्ष्मी घरोंमें गृहलक्ष्मी गृहिणी कलाअंशसे निवास करतीहै १८

संपत्स्वरूपागृहिणांसर्वमंगलमंगला ॥
गवांप्रसूतिःसुरभिर्दक्षिणायज्ञकामिनी ॥ १९ ॥

भा०टी०–गृहस्थियोंके यहां सम्पत् स्वरूपा सब मंगलकी मंगल करनेवाली गायोंकी प्रसूति होनेसे सुरभी यज्ञकी कामनामें दक्षिणा ॥ १९ ॥

क्षीरोदासिंधुकन्यासाश्रीरूपापद्मिनीषुच ॥
शोभास्वरूपाचंद्रेचसूर्यमंडलमंडिता ॥२०॥

भा०टी०-क्षीरसागरकी कन्या पद्मिनियोंमें श्रीरूपा चन्द्रमामें शोभास्वरूप सूर्यमंडलमें मंडित ॥ २० ॥

विभूषणेषुरत्नेषुफलेषुचजलेषुच ॥
नृपेषुनृपपत्नीषुदिव्यस्त्रीषुगृहेषुच ॥ २१॥

भा०टी०-विभूषण रत्न फल जल नृप नृपपत्नी दिव्य स्त्री और घरोंमें ॥ २१ ॥

सर्वसस्येषुवस्त्रेषुस्थानेषुसंस्कृतेषुच ॥
प्रतिमासुचदेवानांमंगलेषुघटेषुच ॥ २२ ॥

भा०टी०-सब धान्य वस्त्र संस्कृतस्थान देवताओंकी प्रतिमा मंगल घटोंमें ॥ २२ ॥

माणिक्येषुचमुक्तासुमाल्येषुचमनोहरा ॥
मणींद्रेषुचहीरेषुक्षीरेषुचंदनेषु च ॥ २३ ॥

भा०टी०-माणिक्य मुक्ता मनोहर माला मणियोंके हार क्षीर और चन्दनमें ॥ २३ ॥

वृक्षशाखासुरम्यासुनवमेघेषुवस्तुषु ॥
वैकुंठेपूजितामाऽऽद्यादेवीनारायणेनच ॥२४॥

भा०टी०—मनोहर वृक्षशाखा नवीन मेघ और वस्तुओंमें रहती. प्रथम नारायणने वैकुंठमें पूजन किया २४॥

द्वितीयेब्रह्मणाभक्त्यातृतीयेशंकरेणच ॥
विष्णुनापुजितासाचक्षीरोदेभारतेमुने ॥२५॥

भा०टी०—दूसरी वार भक्तिसे ब्रह्माने और तीसरी वार शंकरने पूजन किया है. हे मुने ! फिर क्षीरोदमें विष्णुने पूजन किया है ॥ २५ ॥

स्वायंभुवेनमनुनामानवेंद्रैश्चसर्वतः ॥
ऋषींद्रैश्च मुनींद्रैश्चसद्भिश्च गृहिभिर्भवे ॥ २६ ॥

भा०टी०—मानवेन्द्र स्वायंभुव मनुने तथा ऋषि मुनि और सद्भक्ति करनेवाले गृहस्थियोंने पूजन किया है २६

गंधर्वैश्चैवनागाद्यैःपातालेषुचपूजिता ॥
शुक्लाष्टम्यांभाद्रपदेकृतापूजाचब्रह्मणा॥२७॥

भा०टी०—गन्धर्व तथा नागादिने पातालमें पूजन किया है शुक्लाष्टमीको भाद्रपदमें ब्रह्माजीने पूजन किया२७

भक्त्याचपक्षपर्यंतंत्रिपुलोकेषुनारद ॥
त्रेपौषेचभाद्रेचपुण्येमंगलवासरे ॥ २८ ॥

भा०टी०—हे नारद ! तीनों लोकमें भक्तिसे पक्षपर्यन्त पूजन होता है. चैत्र, पौष, भाद्रपद, मंगलवारमें पूजन होता है ॥ २८ ॥

विष्णुनापूजितासाचत्रिषुलोकेषुभक्तितः ॥
वर्षांतेपौषसंक्रांत्यांमाघ्यामावाह्यमंगले २९॥

भा०टी०—विष्णुने तथा त्रिलोकीने भक्तिपूर्वक पूजा की वर्षके अन्तमें पौषसंक्रान्ति माघी पूर्णिमाको आवाहन करके ।। २९ ।।

मनुस्तांपूजयामासस्राभूताभुवनत्रये ॥
पूजितासामहेंद्रेणमंगलेनैवमंगला ॥ ३० ॥

भा०टी०—मनुने उनका पूजन कराया और मंगलारूपा लक्ष्मीका महेन्द्रने भी पूजन किया है ।। ३० ॥

केदारेणैवनीलेनसुबलेननलेनच ॥
ध्रुवेणोत्तानपादेनशक्रेणबलिनातथा ॥३१॥

भा०टी०—केदार, नील, सुबल, नल, ध्रुव, उत्तानपाद, इन्द्र, बलि ॥ ३१ ॥

कश्यपेनचदक्षेणकर्दमेनविवस्वता ॥
प्रियव्रतेनचंद्रेणकुबेरेणैववायुना ॥ ३२ ॥

भा०टी०—कश्यप, दक्ष, कर्दम, विवस्वान्, प्रिय-
व्रत, चन्द्र, कुबेर, वायु ॥ ३२ ॥

यमेनवह्निनाचैववरुणेनैवपूजिता ॥
एवंसर्वत्रसर्वेषुपूजितावंदितासदा ॥ ३३ ॥

भा०टी०—यम, वह्नि और वरुणने पूजन किया और
प्रणाम किया. इस प्रकार सबने सर्वत्र पूजन किया॥ ३३॥

सर्वैश्वर्याधिदेवीसासर्वसंपत्स्वरूपिणी ॥
इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे श्रीम-
हालक्ष्म्युपाख्याने प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

भा०टी०—वह सब ऐश्वर्यकी देवी सब सम्पत्स्वरूपिणी
है ।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे श्रीमहाल-
क्ष्म्युपाख्याने भाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः २.

नारदउवाच ।

नारायणप्रियासाचवरावैकुंठवासिनी ॥
वैकुंठाधिष्ठातृदेवीमहालक्ष्मीः सनातनी ॥ १ ॥

भा०टी०—नारदजी बोले वह नारायणकी प्रिया श्रेष्ठ वैकुंठवासिनी, वैकुंठकी अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी सनातनी ॥ १ ॥

कथंबभूवसादेवीपृथिव्यांसिंधुकन्यका ॥
पुराकेनस्तुताऽऽदौसातन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ २ ॥

भा०टी०—फिर भूमिमें किस प्रकार क्षीरसागरकी कन्या हुई और पहिले किसने उनकी स्तुति की सो आप मुझसे कहिये ॥ २ ॥

श्रीनारायणउवाच ।

पुरादुर्वाससःशापाद्भ्रष्टश्रीश्चपुरंदरः ॥
बभूवदेवसंघश्चमर्त्यलोकेचनारद ॥ ३ ॥

भा०टी०—श्रीनारायण बोले एक समय दुर्वासाके शापसे

इन्द्र श्रीभ्रष्ट हुए थे और मर्त्यलोकमें देवताओंके समूह एकत्रित हुए ॥ ३ ॥

लक्ष्मीःस्वर्गादिकंत्यक्त्वारुष्टापरमदुःखिता ॥
गत्वालीनाचवैकुंठेमहालक्ष्मीश्चनारद ॥ ४ ॥

भा०टी०—लक्ष्मी स्वर्गादिको त्यागनकर रुष्ट और परम दुःखित हुई, हे नारद ! वह जाकर वैकुंठमें लीन होगई ॥ ४ ॥

तदाशोकाद्ययुःसर्वेदुःखिताब्रह्मणःसभाम् ॥
ब्रह्माणंचपुरस्कृत्यययुर्वैकुंठमेवच ॥ ५ ॥

भा०टी०—तब सबकोई दुःखी हो ब्रह्माकी सभामें गये और ब्रह्माजीको आगे कर वैकुंठमें गये ॥ ५ ॥

वैकुंठेशरणापन्नादेवानारायणेपरे ॥
अतीवदैन्ययुक्ताश्चशुष्ककंठोष्ठतालुकाः ॥ ६ ॥

भा०टी०—सब देवता वैकुंठमें परमदेव नारायणकी शरण हुए अतिदैन्ययुक्त होनेसे उनके कंठ ओष्ठ तालु तीनों सूखगये ॥ ६ ॥

तदालक्ष्मीश्चकलयापुराणपुरुषाज्ञया ॥
बभूवसिंधुकन्यावासर्वसंपत्स्वरूपिणी ॥ ७ ॥

भा०टी०—तब पुराण पुरुषकी आज्ञासे कलारूप लक्ष्मी सर्वसंपत्स्वरूपिणी सागरकन्या हुई थी ॥ ७ ॥

तथामथित्वाक्षीरोदंदेवादैत्यगणैःसह ॥
संप्राप्ताश्चमहालक्ष्मींविष्णुस्तांददर्शह ॥ ८ ॥

भा०टी०—तब देवता दैत्योंने क्षीरसागर मंथन कर महालक्ष्मीको प्राप्त किया विष्णुने उनको देखा ॥ ८ ॥

सुरादिभ्योवरंदत्त्वावनमालांचविष्णवे ॥
ददौप्रसन्नवदनातुष्टाक्षीरोदशायिने ॥ ९ ॥

भा०टी०—देवादिको वर और क्षीरसागरशायी विष्णुको प्रसन्नतासे वनमाला देकर प्रसन्न किया ॥ ९ ॥

देवाश्चाऽप्यसुरास्तेराज्यंप्रापुश्चनारद ॥
तांसंपूज्यचसंभूयसर्वेश्चचानिरापदः ॥ १० ॥

भा०टी०—हे नारद ! तब देवताओंने असुरोंके

सहित राज्यको फिर पाया तब भगवतीकी पूजा कर सब ई आपत्तिरहित हुए ॥ १० ॥

नारदउवाच ।

कथंशशापदुर्वासामुनिश्रेष्ठःकदाचन ॥

केनदोषेणवाब्रह्मन्ब्रह्मिष्ठस्तत्त्ववित्पुरा ॥ ११ ॥

भा०टी०—नारदजी बोले हे ब्रह्मन् ! तत्त्ववित् मुनिश्रेष्ठ दुर्वासाने क्या शाप दिया क्या दोष था वह तौ तत्त्ववित् थे ॥ ११ ॥

ममंथुःकेनरूपेणजलाधिंतेसुरादयः ॥

केनस्तोत्रेणवादेवीशक्रंशाक्षाद्बभूवसा ॥ १२ ॥

भा०टी०—और उन सुरादिने किस प्रकार सागरको मथा और किस स्तोत्रसे देवी इन्द्रके सन्मुख प्रगट हुई ॥ १२ ॥

कोवातयोश्वसंवादोबभूवतद्वदप्रभो ॥

श्रीनारायणउवाच ।

मधुपानप्रमत्तश्चत्रैलोक्याधिपातिःपुरा ॥ १३ ॥

भा०टी०—हे प्रभो ! किस प्रकार उन इन्द्र और दुर्वासा-

का सम्वाद हुआ सो आप कहिये. श्रीनारायण बोले पहले त्रैलोक्याधिपति इन्द्र मधुपानसे मत्त होकर ॥ १३ ॥

क्रीडांचकाररहासिरंभयासहकामुकः ॥
कृत्वाक्रीडांतयासार्धंकामुक्याहृतमानसः॥ १४॥

भा०टी०—कामुक हो एकान्तमें रंभाके साथ क्रीडा करने लगे. उसके साथ क्रीडा करनेसे देवराजका मन उसमें पडा था ॥ १४ ॥

तस्थौतत्रमहारण्येकामोन्मथितमानसः ॥
कैलासशिखरेयांतंवैकुंठादृषिसत्तमम् ॥ १५॥

भा०टी०—कामसे उन्मथित हो उस महावनमें निवास करने लगे उस समय ऋषिश्रेष्ठ वैकुंठसे कैलासशिखरमें जाते थे ॥ १५ ॥

दुर्वाससंददर्शेंद्रोज्वलंतंब्रह्मतेजसा ॥
ग्रीष्ममध्याह्नमार्तंडसहस्रप्रभमीश्वरम्॥ १६॥

भा०टी०—उन ब्रह्मतेजसे प्रज्वलित दुर्वासा ऋषिके

देखकर कि, जिनकी प्रभा मध्याह्नकालीन सूर्यके समान चमक रही थी ॥ १६ ॥

प्रतप्तकांचनाकारंजटाभारमहोज्ज्वलम् ॥
शुक्लयज्ञोपवीतंचचीरदंडौकमंडलुम् ॥१७॥

भा०टी०—तप्त सुवर्णके समान जटाभार बडा उज्ज्वल था श्वेत यज्ञोपवीत चीर दण्ड कमंडलु लिये ॥ १७ ॥

महोज्ज्वलंचातिलकंबिभ्रतंचेंदुसन्निभम् ॥
समन्वितंशिष्यलक्षैर्वेदवेदांगपारगैः ॥१८ ॥

भा०टी०—महाप्रकाशमान् चलायमान इन्द्रके समान प्रकाशित लाखों वेदवेदांगके पारगामी शिष्योंसे युक्त॥ १८॥

दृष्ट्वाननामशिरसासंभ्रमत्तः पुरंदरः ॥
शिष्यवर्गंतदाभक्त्यातुष्टावचमुदान्वितम् ॥१९॥

भा०टी०—देखतेही इन्द्रने उनको शिरसे प्रणाम किया और प्रसन्न हो उन मुनिके शिष्यसमूहोंको संतुष्ट किया१९

मुनिनाचसशिष्येणदत्तास्तस्मैशुभाशिषः ॥
विष्णुदत्तंपारिजातपुष्पंचसुमनोहरम् ॥ २० ॥

भा०टी०—मुनिराजने शिष्योंसहित आशीर्वाद दिये और विष्णुके दिये मनोहर पारिजात पुष्पको ॥ २० ॥

तज्जरारोगमृत्युघ्नंशोकघ्नंमोक्षकारकम् ॥
शक्रःपुष्पंगृहीत्वाचप्रमत्तो राज्यसंपदा ॥ २१ ॥

भा०टी०—"जो कि जरारोग और मृत्युका नाशक शोकहारी और मोक्षका करनेवाला है" दिया. शक्र उस फूलको लेकर राज्यसम्पत्तिसे प्रमत्त हो ॥ २१ ॥

पुष्पंसन्यस्तयामासतदैवकरिमस्तके ॥
हस्तीतत्स्पर्शमात्रेणरूपेणचगुणेनच ॥ २२ ॥

भा०टी०—उसने अपने हाथीके ऊपर रखदिया हाथी उसके स्पर्शमात्रसेही रूप और गुणसे ॥ २२ ॥

तेजसावयसाऽकस्माद्विष्णुतुल्योबभूवह ॥
त्यक्त्वाशक्रंगजेंद्रश्चजगामघोरकाननम् ॥२३॥

भा०टी०—तेज और वयसे विष्णुकी तुल्य हुआ तब गजेन्द्र इन्द्रको छोडकर गहन वनमें चलागया ॥ २३ ॥

नशशाकमहेंद्रस्तंरक्षितुंतेजसामुने ॥
तत्पुष्पंत्यक्तवंतंचदृष्ट्वाशक्रंमुनीश्वरः ॥ २४ ॥

भा० टी०—हे मुने ! तेजसे इन्द्र उसकी रक्षा करनेको समर्थ न हुआ. मुनीश्वरने इन्द्रको इस प्रकार फूल त्यागन करता हुआ देखकर ॥ २४ ॥

मुनिरुवाच ।

महामुनिस्तदारुष्टः शशापचरुषान्वितः ॥
अरेश्रियाप्रमत्तस्त्वंकथंमामवमन्यसे ॥ २५ ॥

भा० टी०—महामुनिने रुष्ट होकर शाप दिया. मुनि बोले अरे लक्ष्मीसे प्रमत्त ! तुम मेरे अपमान क्यों करते हो २५

मद्दत्तपुष्पंदत्तंचगर्वेणकरिमस्तके ॥
विष्णोर्निवेदितंचैवनैवेद्यंवाफलंजलम् ॥ २६ ॥

भा० टी०—मेरा दिया फूल तैंने हाथीके मस्तकपर क्यों रख दिया. विष्णुको निवेदन किया नैवेद्य, जल, फल ॥ २६ ॥

प्राप्तिमात्रेणभोक्तव्यंत्यागेनब्रह्महाभवेत् ॥
भ्रष्टश्रीर्भ्रष्टबुद्धिश्चपुरभ्रष्टोभवेत्तुसः ॥ २७ ॥

भा०टी०—प्राप्तिमात्रही भोगना चाहिये. अन्यथा ब्रह्महत्या लगती है तुम भ्रष्टश्री भ्रष्टबुद्धि और अपने पुरसे भ्रष्ट हो जाओ ॥ २७ ॥

यस्त्यजेद्विष्णुनैवेद्यंभाग्येनोपास्थितंशुभम् ॥
प्राप्तिमात्रेणयोभुंक्तेभक्तोविष्णुनिवेदितम् २८

भा०टी०—जो भाग्यसे उपस्थित हुए विष्णुके नैवेद्यको प्राप्त होतेही भोग लगाता है जो भक्त विष्णुनिवेदित नैवेद्यको इस प्रकार भोग करते हैं ॥ २८ ॥

पुंसांशतंसमुद्धृत्यजीवन्मुक्तःस्वयंभवेत् ॥
नैवेद्यभोजनंकृत्वानित्यंयःप्रणमेद्धरिम् २९॥

भा०टी०—वह सौ पुरुषोंका उद्धार कर स्वयं जीवन्मुक्त होता है, जो नैवेद्य भोग लगाकर नित्य नारायणको प्रणाम करता है ॥ २९ ॥

पूजयेत्स्तौतिवाभक्त्यासविष्णुसदृशोभवेत ॥
तत्स्पर्शवायुनासद्यस्तीर्थौघः विशुध्यति ३०

भा०टी०—अथवा भक्तिसे पूजन और स्तुति करता है वह विष्णुके समान होता है. उसकी स्पर्श कीहुई वायु-से शीघ्र तीर्थसमूह शुद्ध हो जाते हैं ॥ ३० ॥

तत्पादरजसामूढसद्यःपूतावसुंधरा ॥
पुंश्चल्यन्नमवीरान्नंशूद्रश्राद्धान्नमेवच ॥ ३१ ॥

भा०टी०—हे मूढ ! उनको पादरजसे फिर भूमि शुद्ध होती है पुंश्चलीका अन्न अवीरान्न शूद्रान्न श्राद्धान्न॥ ३१ ॥

यद्धरेरनिवेद्यंचवृथामांसस्यभक्षणम् ॥
शिवलिंगप्रदान्नंचयद्दत्तंशूद्रयाजिना ॥ ३२ ॥

भा०टी०—तथा हरिको विना निवेदन किया अन्न वृथा मांसका भक्षण शिवलिंगपर चढाया हुआ पदार्थ शूद्रयाजीका दिया द्रव्य ॥ ३२ ॥

चिकित्सकद्विजान्नं च देवलान्नं तथैव च ॥
कन्याविक्रयिणामन्नंयदन्नंयोनिजीविनाम् ३३

भा०टी०—चिकित्सक ब्राह्मणका अन्न पुजारीका अन्न कन्या बेचनेवालेका अन्न कुटनीका अन्न ॥ ३३ ॥

उच्छिष्टान्नंपर्युषितंसर्वभक्षावशेषितम् ॥
शूद्रापतिद्विजानांचवृषवाहद्विजान्नकम् ३४॥

भा०टी०–उच्छिष्ट अन्न बासी अन्न सबके खालेने-पर अवशिष्ट अन्न शूद्रापति ब्राह्मणोंका अन्न वृषवाहक द्विजका अन्न ॥ ३४ ॥

अदीक्षितद्विजानांचयदन्नंशवदाहिनाम् ॥
अगम्यागामिनांचैवद्विजानामन्नमेवच॥ ३५॥

भा०टी०–अदीक्षित ब्राह्मणका अन्न शवदाही ब्राह्मणका अन्न अगम्यागामियोंका अन्न ॥ ३५ ॥

मित्रद्रुहांकृतघ्नानामन्नंविश्वासघातिनाम् ॥
मिथ्यासाक्ष्यप्रदान्नंचब्राह्मणान्नंतथैवच ३६॥

भा०टी०–मित्रद्रोही कृतघ्नी विश्वासघाती मिथ्या साक्षी देनेवाले ब्राह्मणका अन्न ॥ ३६॥

एतेसर्वेविशुध्यंतिविष्णोर्नैवेद्यभक्षणात् ॥
श्वपचश्चेद्विष्णुसेवीवंशानांकोटिमुद्धरेत् ३७

भा०टी०—यह सब विष्णुका नैवेद्य भक्षण करनेसे शुद्ध हो जाते हैं यदि श्वपचभी विष्णुका सेवी हो तो कोटिवंशोंका उद्धार करता है ॥ ३७ ॥

हरेरभक्तोमनुजःस्वंचरक्षितुमक्षमः ॥
अज्ञानाद्यदिगृह्णातिविष्णोर्निर्माल्यमेवच ३८

भा०टी०—हरिका अभक्त मनुष्य अपनेको रक्षा करनेमें असमर्थ होता है वह अज्ञानसे यदि विष्णुका नैवेद्य ग्रहण करले ॥ ३८ ॥

सप्तजन्मार्जितात्पापान्मुच्यतेनाऽत्रसंशयः ॥
ज्ञात्वाभक्त्याचगृह्णातिविष्णोर्नैवेद्यमेवच ३९

भा०टी०—तो इसमें सन्देह नहीं कि, वह सात जन्मके अर्जित पापसे मुक्त होता है और जो जानकर भक्तिसे विष्णुका नैवेद्य ग्रहण करते हैं ॥ ३९ ॥

कोटिजन्मार्जितात्पापान्मुच्यतेनिश्चितंहरे ॥
यस्मात्संस्थापितंपुष्पंगवैणकारिमस्तके ४०

भा०टी०—हे इन्द्र ! वह कोटिजन्मके आर्जित पापसे

निश्चयही मुक्त हो जाते हैं; जो कि, तुमने हमारा दिया फूल हाथीके मस्तकपर स्थापित किया है ॥ ४० ॥

तस्माद्युष्मान्परित्यज्ययातुलक्ष्मीर्हरेःपदम् ॥
नारायणस्यभक्तोऽहंनबिभेमिसुराद्विधेः ॥४१॥

भा०टी०—इस कारण तुमको छोडकर लक्ष्मी नारायणके स्थानको गमन करेगी मैं नारायणका भक्त हूं देवता विधातासे नहीं डरताहूं ॥ ४१ ॥

कालान्मृत्योर्जरातश्चकानन्यान्गणयामिच ॥
किंकरिष्यतितेतातःकश्यपश्चप्रजापतिः ४२

भा०टी०—काल मृत्यु जरा किसीसेभी नहीं डरता हूं प्रजापति कश्यप तुम्हारे पिता मेरा क्या कर सकते हैं ४२ ॥

बृहस्पतिर्गुरुश्चैवनिःशंकस्यचमेहरे ॥
इदंपुष्पंयस्यमूर्ध्नितस्यैवपूजनंपरम् ॥ ४३ ॥

भा०टी०—मैं बृहस्पति गुरुसे निःशंक हूं. हे इन्द्र ! यह फूल जिसके शिरपर होता है उसका परमपूजन होता है ॥ ४३ ॥

इतिश्रुत्वामहेंद्रश्चधृत्वासचरणंमुनेः ॥
उच्चैरुरोदशोकार्तस्तमुवाचभयाकुलः ॥ ४४ ॥

भा०टी०—यह सुनतेही इन्द्रने मुनिराजके चरण पकडे और शोकसे व्याकुल हो ऊंचे स्वरसे रोताहुआ भयाकुल हुआ ॥ ४४ ॥

महेन्द्रउवाच ।

दत्तःसमुचितःशापोमह्यंमायापहःप्रभोः ॥
हृतांनयाचेसंपात्तिंकिंचिज्ज्ञानंचदेहिमे ४५ ॥

भा०टी०—महेन्द्रने कहा हे मायाहारी प्रभो ! आपने मुझको उचित शाप दिया है, मैं हरीहुई सम्पात्तिकी याचना नहीं करता आप मुझे कुछ ज्ञान दीजिये ॥ ४५ ॥

ऐश्वर्यंविपदांबीजंज्ञानप्रच्छन्नकारणम् ॥
मुक्तिमार्गकुठारश्चभक्तेश्चव्यवधायकम् ४६ ॥

भा०टी०—ऐश्वर्य विपत्तिका बीज ज्ञानका प्रच्छन्न करनेवाला है तथा मुक्तिमार्गको कुठार और भक्तिमें व्यवधान करनेवाला है ॥ ४६ ॥

मुनिरुवाच।

जन्ममृत्युजराशोकरागबीजांकुरंपरम् ॥
संपत्तितिमिरांधश्चमुक्तिमार्गंनपश्यति॥४७॥

भा०टी०—मुनि बोले जन्म मृत्यु जरा शोक रोगका बीजांकुर है सम्पत्तिरूपी तिमिरमें अंध हो मुक्तिमार्गको नहीं देखता है ॥ ४७ ॥

संपन्मत्तोविमूढश्चसुरामत्तःसएवच ॥
बांधवैर्वेष्टितःसोऽपिबंधत्वंनैवहेहरे ॥ ४८ ॥

भा०टी०—सम्पत्तिसे मत्त विमूढ पुरुष सुरामत्तही कहा है और बांधवोंसे वेष्टित हुआ भी एक प्रकारके बंधनमें पडा है ॥ ४८ ॥

संपत्तिमदमत्तश्चाविषयांधश्चविह्वलः ॥
महाकामीराजसिकःसत्त्वमार्गंनपश्यति४९॥

भा०टी०—सम्पत्तिके मदमें मत्त हुआ विषयमें अंधा मदसे विह्वल महाकामी राजसी पुरुष मुक्तिमार्गको नहीं देखता है ॥ ४९ ॥

द्विविधोविषयांधश्चराजसस्तामसःस्मृतः ॥
अशास्त्रज्ञस्तामसश्चशास्त्रज्ञोराजसःस्मृतः ५०

भा०टी०-रजोगुणी तमोगुणी भेदसे विषयांध दो प्रकारका है अशास्त्रज्ञ तामसी और शास्त्रज्ञ रजोगुणी होता है ॥ ५० ॥

शास्त्रंचद्विविधंमार्गंदर्शयेत्सुरपुंगव ॥
प्रवृत्तिबीजमेकंचनिवृत्तेःकारणंपरम् ॥५१॥

भा०टी०-हे इन्द्र ! शास्त्र दो प्रकारका मार्ग दिखलाता है, एक प्रवृत्तिका बीज और एक निवृत्तिका कारण है ॥ ५१ ॥

चरंतिजीविनश्चादौप्रवृत्तेर्दुःखवर्त्मनि ॥
स्वच्छंदंचप्रसन्नंचनिर्विरोधंचसंततम् ॥५२॥

भा०टी०-प्रथम मार्ग प्रवृत्तिरूपमें जीव भ्रमण करते हैं स्वच्छन्द प्रसन्न निर्विरोध उन्मत्तवत् रहता है ॥ ५२ ॥

आयातिमधुनोलोभात्क्लेशेनसुखमानितः ॥
परिणामेनाशबीजे जन्ममृत्युजराकरे ॥ ५३॥

भा०टी०–मधुके लोभसे आकर क्लेशमें सुख मानता है परिणाममें नाशकारक जन्म मृत्यु और जरा करनेवाला है ॥ ५३ ॥

अनेकजन्मपर्यंतंकृत्वाचभ्रमणंमुदा ॥
स्वकर्मविहितायांचनानायोन्यांक्रमेणच५४॥

भा०टी०–इस प्रकार अनेक जन्मपर्यन्त भ्रमण करके अपने कर्मानुसार अनेक योनियोंमें विचरण करताहै५४

ततश्चेशानुग्रहाच्चसत्संगंलभतेचसः ॥
सहस्रेषुशतेष्वेकोभवाब्धिपारकारणम् ५५॥

भा०टी०–फिर ईश्वरके अनुग्रहसे उसको सत्संगकी प्राप्ति होती है सहस्रों सैकडोंमें कोई एक संसारसागरके पारके कारण ॥ ५५ ॥

साधुस्तत्त्वप्रदीपेनमुक्तिमार्गंप्रदर्शयेत् ॥
तदाकरोतियत्नंचजीवोबंधनखंडने ॥५६ ॥

भा०टी०–साधु तत्त्वदीपकसे मुक्तिमार्ग दिखाता है तब यह जीव बंधनके खण्डनका यत्न करता है ॥५६ ॥

अनेकजन्मयोगेनतपसाऽनशनेनच ॥
तद्दाऽलभेन्मुक्तिमार्गंनिर्विघ्नंसुखदंपरम् ॥ ५७॥

भा० टी०—अनेक जन्मके योग तपस्या भोजन त्यागसे निर्विघ्न परम सुखदायक मुक्तिमार्गको प्राप्त होताहै ॥ ५७॥

इदंश्रुतंगुरोर्वैक्त्राद्यत्पृच्छसिपुरंदर ॥
मुनेस्तद्वचनंश्रुत्वावीतरागोबभूवसः ॥ ५८॥

भा० टी०—हे इन्द्र ! जो तुमने पूँछा है यह मैंने गुरुके मुखसे सुना है तब मुनिके वचन सुन इन्द्र वीतराग हुए ॥ ५८ ॥

वैराग्यंवर्धयामासतस्यचान्दिनेदिने ॥
मुनेःस्थानाद्गृहंगत्वासदद्दर्शाऽमरावतीम् ॥ ५९

भा० टी०—और दिन दिन वैराग्य बढने लगा मुनिके स्थानसे घरको जाकर जब इन्द्रने अमरावतीको देखा तो ॥ ५९ ॥

दैत्यैरसुरसंघैश्चसमाकीर्णांभयाकुलाम् ॥
विषमोपप्लुतांकुत्रबंधुहीनांचकुत्रचित् ॥ ६०॥

भा०टी०—वह दैत्य असुरोंसे व्याप्त बडी भयानक होगई थी कहीं विपक्का उपद्रव कहीं बंधुहीनता ॥६० ॥

पितृमातृकलत्रादिविहीनामतिचंचलाम् ॥
शत्रुग्रस्तांचतांदृष्ट्वाजगामवाक्पतिंप्रति॥ ६१॥

भा०टी०—कहीं पिता माता कलत्रसे विहीन अतिचं-चल तथा विविध शत्रुसे ग्रसित देखकर इन्द्र बृहस्पतिके समीप गये ॥ ६१ ॥

शक्रोमंदाकिनीतीरेददर्शगुरुमीश्वरम् ॥
ध्यायमानंपरंब्रह्मगंगातोयेस्थितंपरम् ॥६२॥

भा०टी०—इन्द्रने मन्दाकिनीके किनारे गुरुजीको देखा जो परब्रह्मको ध्यान करते गंगाके जलमें स्थित थे ॥६२॥

सूर्याभिसंमुखंपूर्वमुखंचाद्भिश्चतोमुखम् ॥
संतोषाश्रुपुलकिनंपरमानंदसंयुतम् ॥ ६३ ॥

भा०टी०—सूर्यके सन्मुख पूर्वको मुख किये सब ओर मुखवाले ईश्वरके प्रेममें आंसू भरे रोमांच शरीर परमानन्द सम्पन्न थे ॥ ६३ ॥

वरिष्ठंचगरिष्ठंचधार्मिष्ठंश्रेष्ठसेवितम् ॥
श्रेष्ठंचबंधुवर्गाणामतिश्रेष्ठंचज्ञानिनाम् ॥ ६४॥

भा०टी०—वरिष्ठ गरिष्ठ धर्मिष्ठ श्रेष्ठ पुरुषोंसे सेवित बंधुवर्गोंमें श्रेष्ठ ज्ञानियोंमें अतिश्रेष्ठ ॥ ६४ ॥

ज्येष्ठंचभ्रातृवर्गाणामनिष्टंसुरवैरिणाम् ॥
दृष्ट्वागुरुंजपंतंचतत्रतस्थौसुरेश्वरः ॥६५ ॥

भा०टी०—भ्रातृवर्गोंमें ज्येष्ठ देववैरियोंके अनिष्टकारक उन गुरुजीको जपमें तत्पर देखकर इन्द्र उसी स्थानमें स्थित हुए ॥ ६५ ॥

प्रहरांतेगुरुंदृष्ट्वाचोत्थितंप्रणनामसः ॥
प्रणम्यचरणांभोजेरुरोदोच्चैर्मुहुर्मुहुः ॥ ६६ ॥

भा०टी०—जब एक पहरके अन्तमें गुरुजी उठे तब प्रणाम किया और उनके चरणोंमें पडकर अमरेश रुदन करने लगे ॥ ६६ ॥

वृत्तांतंकथयामासब्रह्मशापादिकंतथा ॥
नर्षीपलब्धिंचज्ञानप्राप्तिंसुदुर्लभाम् ॥ ६७॥

भा०टी०—और दुर्वासाके शापका सब वृत्तान्त कहा फिर वर और दुर्लभज्ञानकी प्राप्ति कही ॥ ६७ ॥

वैरिग्रस्तांचस्वपुरींक्रमेणैवसुरेश्वरः ॥
शिष्यस्यवचनंश्रुत्वासुबुद्धिर्वदतांवरः ॥६८॥

भा०टी०—फिर वैरियोंसे ग्रस्त अपनी पुरीका वृत्तान्त कहा शिष्यके वचन सुनकर बोलनेवालोंमें अतिश्रेष्ठ सुबुद्धि ॥ ६८ ॥

गुरुरुवाच ।

बृहस्पतिरुवाचेदंकोपसंरक्तलोचनः ॥
श्रुतंसर्वंसुरश्रेष्ठमारोदीर्वचनंशृणु ॥ ६९ ॥

भा०टी०—बृहस्पतिजी क्रोधकर यह वचन बोले बृहस्पति बोले हे इन्द्र ! यह मैंने सब सुना परन्तु मत रोओ हमारे वचन सुनो ॥ ६९ ॥

नाकान्तशोहिनीतिज्ञोविपत्तौचकदाचन ॥
संपत्तिर्वाविपत्तिर्वानश्वराभ्रमरूपिणी॥ ७० ॥

भा०टी०—नीतिज्ञाता पुरुष विपत्तिमें कभी कातर नहीं होते हैं सम्पत्ति वा विपत्ति यह सब भ्रमरूप और नश्वर है ॥ ७० ॥

पूर्वंस्वकर्मायत्ताचस्वयंकर्तातयोरपि ॥
सर्वेषांचभवत्येवशश्वज्जन्मनिजन्मनि ॥ ७१॥

भा०टी०—यह अपने पूर्वकर्मके अनुसार सबका स्वयं कर्ता है यह जन्म २ सबकोही प्राप्त होती है ॥ ७१ ॥

चक्रनेमिक्रमेणैवतत्रकापरिदेवना ॥
उक्तंहिस्वकृतंकर्मभुज्यतेऽखिलभारते ॥ ७२ ॥

भा०टी०—पहियेके समान सुख दुःख घूमते हैं इसमें दुःख करना क्या है यह कहाही है अपना किया कर्म भोगा जाता है ॥ ७२ ॥

शुभाशुभंचयत्किंचित्स्वकर्मफलभुक्पुमान् ॥
नाऽभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पकोटिशतैरपि ॥ ७३ ॥

भा०टी०—शुभ अशुभ कोई क्यों न हो यह पुरुष

अपने कर्मका फल भोगता है कोटिकल्प शतवर्षमें भी विना भोगे कर्मक्षय नहीं होता है ॥ ७३ ॥

अवश्यमेवभोक्तव्यं कृतं कर्मशुभाशुभम् ॥
इत्येवमुक्तंवेदेचकृष्णेनपरमात्मना ॥ ७४ ॥

भा०टी०—शुभाशुभ किया कर्म अवश्यही भोगना पडता है यह वेदमें श्रीकृष्ण परमात्माद्वारा कथित हुआ है ७४

सामवेदोक्तशाखायांसंबोध्यकमलोद्भवम् ॥
जन्मभोगावशेषचसर्वेषांकृतकर्मणाम् ॥ ७५ ॥

भा०टी०—अर्थात् सामवेदकी शाखामें ब्रह्माजीसे सबके कर्मोंका जन्म भोगावशेष कहा है ॥ ७५ ॥

अनुरूपंहितेषांचभारतेऽन्यत्रचैवहि ॥
कर्मणाब्रह्मशापंचकर्मणाचशुभाशिषम् ॥ ७६ ॥

भा०टी०—अर्थात् कर्मकेही अनुसार भारतमें वा अन्य कहीं जन्म होता है कर्मसेही ब्रह्मशाप और कर्मसेही आशीर्वाद प्राप्त होता है ॥ ७६ ॥

कर्मणाचमहालक्ष्मीलभेदैन्यंचकर्मणा ॥
कोटिजन्मार्जितंकर्मजीविनामनुगच्छति ॥ ७७॥

भा०टी०–कर्मसेही महालक्ष्मी और दीनता प्राप्त होती है कोटि जन्मोंका उपार्जित पुण्य भी जीवोंके पीछे चलता है ॥ ७७ ॥

नहित्यजेद्विनाभोगंतच्छायेवपुरंदर ॥
कालभेदेदेशभेदेपात्रभेदेचकर्मणाम् ॥ ७८ ॥

भा०टी०–हे पुरन्दर ! विना भोगके उसकी छाया कभी नहीं छोडती देश काल पात्रके भेदसे कर्मोंकी ॥ ७८ ॥

न्यूनताधिकभावोऽपिभवेद्वाहिकर्मणा ॥
वस्तुदानेनवस्तूनांसमंपुण्यंदिनेदिने ॥ ७९ ॥

भा०टी०–कर्मसेही न्यूनता और अधिकता होती है वस्तुके दानसे दिनदिन वस्तुओंके समान पुण्य होताहै ७९

दिनभेदेकोटिगुणमसंख्यंवाततोऽधिकम् ॥
समेदेशेचवस्तूनांदानेपुण्यं समं सुर ॥ ८० ॥

भा॰टी॰—दिनके भेदसे कोटिगुण और असंख्य वा इससेभी अधिक पुण्य होताहै और हे इन्द्र! समदेशमें वस्तुदानका समान पुण्य

देशभेदेकोटिगुणमसंख्यंवाततोऽधिकम् ॥
समेपात्रेसमंपुण्यंवस्तूनांकर्तुरेव च ॥ ८१ ॥

भा॰टी॰—देशभेदसे कोटिगुण असंख्य वा इससे अधिक होता है समपात्रमें वस्तुदान करनेवालेको समान पुण्य होताहै ॥ ८१ ॥

पात्रभेदेशतगुणमसंख्यं वा ततोऽधिकम् ॥
यथाफलंतिसस्यानिन्यूनान्यप्यधिकानिच ८२॥

भा॰टी॰—पात्र भेदसे सौगुना असंख्य वा उससेभी अधिक होताहै जैसे धान्य बराबर बोये जाकर न्यूनाधिक फलते हैं ॥ ८२ ॥

कर्षकाणां क्षेत्रभेदेपात्रभेदेफलंतथा ॥
सामान्यादविशेषेपिप्रदानंफलसमंभवेत् ॥ ८३ ॥

भा०टी०—कर्षकोंके क्षेत्रभेदसे न्यूनाधिकता होती है, इसी प्रकार पात्रभेदमें फल होता है. हे इन्द्र ! सामान्यदिनमें दानका सामान्य फल होता है ॥ ८३ ॥

अमायांरविसंक्रांत्यांफलंशतगुणंभवेत् ॥
चातुर्मास्यांपौर्णमास्यामनंतफलमेवच ॥ ८४ ॥

भा०टी०—अमावास्या और संक्रांतिमें सौगुणा फल होता है चातुर्मास्यकी पूर्णमासीमें अनन्त फल होताहै ८४

ग्रहणेशशिनःकोटिगुणंचफलमेवच ॥
सूर्यस्यग्रहणेवाऽपिततोदशगुणंभवेत् ॥ ८५ ॥

भा०टी०—चन्द्रग्रहणका कोटिगुणा फल सूर्यग्रहणका उससेभी दशगुण फल होता है ॥ ८५ ॥

अक्षयायामक्षयंतदसंख्यंफलमुच्यते ॥
एवमन्यत्रपुण्याहेफलाधिक्यंभवेदिति ॥ ८६ ॥

भा०टी०—और अक्षयतिथिमें अक्षयफल होता है इसी प्रकार और भी पुण्यदिनोंमें अधिक फल होताहै ८६

यथादानेतथास्नानेजपेऽन्यपुण्यकर्मसु ॥
एवंसर्वत्रबोद्धव्यंनराणांकर्मणांफलम् ॥ ८७ ॥

भा०टी०—जैसे दान स्नान जप और पुण्यकर्मोमें होताहै इसी प्रकार मनुष्योंके कर्मका फल जानना चाहिये ॥ ८७ ॥

यथादंडेनचक्रेणशरावेणभ्रमेण च ॥
कुंभंनिर्मातिनिर्माताकुंभकारोमृदाभुवि ॥ ८८ ॥

भा०टी०—जिस प्रकार दण्डचक्रादिके भ्रमणसे कुम्हार घट निर्माण करता है और मृत्तिकासे कार्य करता है ८८ ॥

तथैवकर्मसूत्रेणफलंधातादुदाति च ॥
यस्याज्ञयासृष्टमिदंतंचनारायणंभज ॥ ८९ ॥

भा०टी०—इसी प्रकार विधाता कर्मसूत्रसे फल देता है जिसकी आज्ञासे यह सृष्टि चलती है उस नारायणको भजो ॥ ८९ ॥

सविधाताविधातुश्चपातुःपाताजगत्त्रये ॥
स्रष्टुःस्रष्टाचसंहर्तुःसंहर्ताकालकालकः ॥९०॥

भा०टी०—वह विधाताका विधाता रक्षकका रक्षक तीनों जगत्का रक्षक, सृष्टिकाभी सृजन करनेवाला, संहार करनेवालेकाभी संहार करनेवाला है ॥ १० ॥

महाविपत्तौसंसारे यः स्मरेन्मधुसूदनम् ॥
विपत्तौतस्यसंपात्तिर्भवेदित्याहशंकरः ॥११॥

भा०टी०—महाविपत्तिवाले संसारमें जो मधुसूदनका स्मरण करता है उसकी विपत्तिमें सम्पत्ति होती है ऐसा शंकरने कहा है ॥ ११ ॥

इत्येवमुक्त्वातत्त्वज्ञः समालिंग्यसुरेश्वरम् ॥
दत्त्वाशुभाशिषंचेष्टंबोधयामासनारद ॥१२॥

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेश्रीमहालक्ष्म्युपाख्याने द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

भा०टी०—वह तत्त्वज्ञ इस प्रकार कह इन्द्रको आलिंगन कर और इष्ट आशीर्वाद देकर समझाते भये ॥१२ ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे श्रीमहालक्ष्म्युपाख्याने भाषाटीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

तृतीयोऽध्यायः ३

नारायणउवाच ।

हरिंध्यात्वाहरिंब्रह्मञ्जगामब्रह्मणःसभाम् ॥
बृहस्पतिंपुरस्कृत्यसर्वैः सुरगणैः सह ॥ १ ॥

भा०टी०—नारायण बोले तब इन्द्रने हरिका ध्यान कर ब्रह्माकी सभामें गमन किया तब सब देवता बृहस्पतिको आगे करके ॥ १ ॥

शीघ्रंगत्वाब्रह्मलोकंदृष्ट्वाचकमलोद्भवम् ॥
प्रणेमुर्देवताः सर्वाःसहेंद्रागुरुणासह ॥ २ ॥

भा०टी०—शीघ्र ब्रह्मलोकमें जाय ब्रह्माजीको देख इन्द्र और गुरुके सहित उनको प्रणाम करते हुए ॥ २ ॥

वृत्तांतंकथयामाससुराचार्योविधिंप्रति ॥
प्रहस्योवाचतच्छ्रुत्वामहेंद्रंकमलासनः ॥ ३ ॥

भा०टी०—तब सुराचार्यने विधातासे यह सब वृत्तान्त कहा तब कमलासनने हँसकर महेन्द्रसे कहा ॥ ३ ॥

वत्समद्वंशजातोऽसिप्रपौत्रोमेविचक्षणः ॥
बृहस्पतेश्चशिष्यस्त्वंसुराणामधिपः स्वयम् ४

भा०टी०—ब्रह्मा बोले हे वत्स ! मेरे वंशमें उत्पन्न हुए तुम मेरे चतुर प्रपौत्र हो बृहस्पतिके शिष्य और देवताओंके स्वयं अधिपति हो ॥ ४ ॥

मातामहश्चदक्षस्तेविष्णुभक्तः प्रतापवान् ॥
कुलत्रयंयस्यशुद्धंकथंसोऽहंकृतोभवेत् ॥५ ॥

भा०टी०—तुम्हारे मातामह दक्ष प्रतापवान् विष्णुभक्त हैं जिसके तीनों कुल शुद्ध हैं उसको अहंकार कैसे हो सकता है ? ॥ ५ ॥

मातापतिव्रतायस्यापिताशुद्धोजितेंद्रियः ॥
मातामहोमातुलश्चकथंसोऽहंकृतोभवेत् ॥६॥

भा०टी०—जिसकी माता पतिव्रता और पिता शुद्ध जितेन्द्रिय है मातामहके मामा जिसका शुद्ध हो वह अहंकारयुक्त कैसे होसकता है ॥ ६ ॥

जनः पैतृकदोषेण दोषान्मातामहस्यच ॥
गुरुदोषात्त्रिभिर्दोषैर्हरिदोषीभवेद्ध्रुवम् ॥ ७ ॥

भा०टी०-यह मनुष्य पिता और मातामहके दोषसे गुरुके दोषसे देवताका अपराधी होता है ॥ ७ ॥

सर्वांतरात्माभगवान्सर्वदेहेष्ववस्थितः ॥
यस्यदेहात्सप्रयातिसशवस्तत्क्षणेभवेत् ॥ ८ ॥

भा०टी०-सबके अन्तरात्मा भगवान् सबके देहमें स्थित जिसके देहसे निर्गत हो जाता है वह उसी समय शवरूप होजाता है ॥ ८ ॥

मनोहमिंद्रियेशश्चज्ञानरूपोहिशंकरः ॥
विष्णुप्राणाचप्रकृतिर्बुद्धिर्भगवतीसती ॥ ९ ॥

भा०टी०-मन इन्द्रियोंका अधिपति मैं हूं और शंकर ज्ञानरूप प्रकृति भगवती बुद्धि सती विष्णुकी प्राण-स्वरूपा है ॥ ९ ॥

निद्रादयः शक्तयश्च ताः सर्वाः प्रकृतेःकला ॥
आत्मनः प्रतिबिंबश्चजीवोभोगशरीरभृत् १०

भा०टी०-निद्रादिक शक्तियें सब प्रकृति कला हैं अपना प्रतिबिम्ब जीवभोग शरीरका धारण करनेवाला है ॥ १० ॥

[illegible]ः ॥
यथावर्त्मनिगच्छंतंनरदेवमिवाऽनुगाः॥ ११॥

भा०टी०-और जब आत्माका अधीश्वर चलाजाता है तब सब संभ्रमरूपसे चलेजाते हैं जैसे मार्गमें जाते राजाके पीछे उनके अनुचरभी जातेहैं ॥ ११ ॥

अहंशिवश्चशेषश्चविष्णुधर्मोमहाविराट् ॥
यूयंयदंशाभक्ताश्चतत्पुष्पंन्यक्कृतंत्वया ॥ १२॥

भा०टी० -मैं, शिव, शेष, विष्णु, धर्म, महाविराट् तुम जिसके अंशके भक्त हो उसीके फूलका तुमने तिरस्कार किया है ॥ १२ ॥

शिवेनपूजितंपादपद्मंपुष्पेणयेनच ॥
तत्रदुर्वासप्रसादत्तंदैवेनन्यक्कृतंत्वया ॥ १३ ॥

भा०टी०–जिस पुष्पसे शिवने भगवान्‌के चरणकमल का पूजन कियाहै वह दुर्वासाका दियाहुआ फूलका तुमने तिरस्कार कर दिया ॥ १३ ॥

तत्पुष्पंमस्तकेयस्यकृष्णपादाब्जप्रच्युतम् ॥
सर्वेषांचसुराणांचतत्पूजापुरतोभवेत् ॥१४॥

भा०टी०–वह कृष्णके चरणकमलका चढा पुष्प जिसके मस्तकमें स्थित है उसकी सबसे अधिक और पूजा पहले क्यों न हो ॥ १४ ॥

दैवेनवंचितस्त्वंहिदैवंचबलवत्तरम् ॥
भाग्यहीनंजनंमूढंकोवारक्षितुमीश्वरः ॥१५॥

भा०टी०–तुम प्रारब्धसे वंचित हुए हो दैवही बलवान् है भाग्यहीन मनुष्योंको देवताभी रक्षा करनेको समर्थ नहीं ॥ १५ ॥

साश्रीर्गताऽधुनाक्कोपात्कृष्णनिर्माल्यवर्जनात् ॥
अधुनागच्छवैकुंठंमयाचगुरुणासह ॥१६॥

भा०टी०—कृष्णानिर्माल्यके वर्जनसे अब लक्ष्मी च-लीगई अब हमारे और गुरुके सहित वैकुण्ठको चलो १६

निषेव्यतत्रश्रीनाथंश्रियंप्राप्स्यासितद्वरात् ॥
एवमुक्त्वाचसब्रह्मासर्वैःसुरगणैःसह ॥ १७ ॥

भा०टी०—वहां श्रियानाथको सेवनकर उन्हीके वरसे लक्ष्मीकी प्राप्ति होगी ब्रह्माजी यह कह सब देवतादिके सहित ॥ १७ ॥

तत्रगत्वापरंब्रह्मभगवंतंसनातनम् ॥
दृष्ट्वातेजःस्वरूपंतंप्रज्वलंतंस्वतेजसा ॥ १८ ॥

भा०टी०—वहां जाय सनातन परब्रह्म तेजस्वरूप अपने तेजसे प्रकाशमान तेजस्वरूपको देखकर ॥ १८ ॥

ग्रीष्ममध्याह्नमार्तण्डशतकोटिसमप्रभम् ॥
शांतमनादिमध्यांतंलक्ष्मीकांतमनंतकम् १९

भा०टी०—ग्रीष्ममध्याह्नमार्तंडके समान सौ कोटिसूर्य-की प्रभावाली, कांति शांति अनादिमध्यांत लक्ष्मीकान्त अनंत ॥ १९ ॥

चतुर्भुजैःपार्षदैश्चसरस्वत्यायुतंप्रभुम् ॥
भक्त्याचतुर्भिर्वेदैश्चगंगयापरिवेष्टितम् ॥२०॥

भा०टी०—चारभुजावाले पार्षद और सरस्वतीसे युक्त भक्तिपूर्वक चार वेद और गंगासे परिवेष्टित ॥ २० ॥

तंप्रणेमुःसुराःसर्वेमूर्ध्नाब्रह्मपुरोगमाः ॥
भक्तिनम्राःसाश्रुनेत्रास्तुष्टुवुःपरमेश्वरम् २१ ॥

भा०टी०—और ब्रह्मा आदि सब देवता उनको प्रणाम करते हुए और भक्तिसे नम्र नेत्रोंमें आंसू भर परमेश्वरकी स्तुति करने लगे ॥ २१ ॥

वृत्तांतंकथयामासस्वयंब्रह्माकृतांजलिः ॥
रुरुदुर्देवताःसर्वाःस्वाधिकाराच्च्युताश्चताः २२॥

भा०टी०—और स्वयं ब्रह्माजी हाथ जोडकर अपना वृत्तान्त कहने लगे और अपने अधिकारसे च्युत होनेसे देवताभी सब रोने लगे ॥ २२ ॥

सददर्शसुरगणांविपद्ग्रस्तंभयाकुलम् ॥
रत्नभूषणशून्यंचवाहनादिविवर्जितम् ॥ २३ ॥

भा०टी०–उन्होंने विपद्ग्रस्त भयाकुल देवताओंको देखा, जो रत्नभूषणशून्य वाहनादिसे वर्जित थे ॥ २३ ॥

शोभाशून्यंहृतश्रीकंनिष्प्रभंसभयंपरम् ॥
उवाचकातरंदृष्ट्वाभयभीतिविभंजनः ॥ २४॥

भा०टी०–शोभासे शून्य, लक्ष्मीसे हत, प्रभारहित, भयभीत हुए देवताओंको कातर देखकर भयमोचन भगवान् कहने लगे ॥ २४ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥

माभैर्ब्रह्मन्हेसुराश्चभयंकिंवोमयिस्थिते ॥
दास्यामिलक्ष्मीमचलांपरमैश्वर्यवर्धिनीम् २५

भा०टी०–श्रीभगवान् बोले हे ब्रह्मन्! हे देवताओ ! मत डरो मेरे होते तुमको भय नहीं है मैं परम ऐश्वर्य बढानेवाली अचललक्ष्मीको दूंगा ॥ २५ ॥

किंचमद्वचनंकिंचिच्छ्रूयतांसमयोचितम् ॥
हितंसत्यंसारभूतंपरिणामसुखावहम् ॥ २६ ॥

भा०टी०–परन्तु इस समय समयोचित मेरे वचनको

सुनो जो हित सत्य सारभूत और परिणाममें सुख करने वाले हैं ॥ २६ ॥

जनाश्चाऽसंख्यविश्वस्थामदधीनाश्चसंततम् ॥
यथातथाऽहंमद्भक्तपराधीनोऽस्वतंत्रकः २७॥

भा०टी०—असंख्य विश्वमें स्थित प्राणी मेरे अधीन हैं परन्तु यथा तथा मैं भक्तोंके विषयमें पराधीन हूं २७॥

यंयंरुष्टोहिमद्भक्तोमत्परोहिनिरंकुशः ॥
तद्गृहेऽहंनतिष्ठामिपद्मयासहनिश्चितम् २८॥

भा०टी०—मेरे भक्त निरंकुश हैं वह जिस जिसपर रुष्ट होंगे मैं लक्ष्मीके सहित उनके यहां स्थित नहीं रहताहूं ॥ २८ ॥

दुर्वासाःशंकरांशश्चवैष्णवोमत्परायणः ॥
तच्छापादागतोऽहंचसलक्ष्मीकोहिवोगृहात् २९

भा०टी०—दुर्वासा शंकरांश वैष्णव मेरे परमभक्त हैं उनके शापसे मैं तुम्हारे घरसे लक्ष्मीसहित चला आयाहूं २९

यत्रशंखध्वनिर्नास्तितुलसीनाशिवार्चनम् ॥
नभोजनंचविप्राणांनपद्मातत्रतिष्ठति ॥ ३० ॥

भा०टी०–जहां शंखध्वनि नहीं है तुलसी और शिव शिवार्चन नहीं है तथा जहां ब्राह्मणभोजन नहीं होता वहां लक्ष्मी नहीं रहती ॥ ३० ॥

मद्भक्तानांचमेनिंदायत्रब्रह्मन्भवेत्सुराः ॥
महारुष्टामहालक्ष्मीस्ततोयातिपराभवम् ३१॥

भा०टी०–हे ब्रह्मन् ! जहां मेरे भक्त और मेरी निन्दा होती है वहां महारुष्ट हो महालक्ष्मी पराभवको प्राप्त होती है ॥ ३१ ॥

मद्भक्तिहीनोयोमूढोभुंक्तेयोहरिवासरे ॥
ममजन्मदिनेवापियातिश्रीस्तद्गृहादपि ॥ ३२॥

भा०टी०–मेरी भक्तिसे हीन होकर जो मूढ हरिवासर एकादशीको भोजन करता है वा मेरे जन्मदिनमें भोजन करता है लक्ष्मी उनके घरसे चली जाती है ॥ ३२ ॥

मन्नामविक्रयीयश्चविक्रीणातिस्वकन्यकाम् ॥
यत्राऽतिथिर्नभुंक्तेचमत्प्रियायातितद्गृहात् ३३

भा०टी०-जो मेरे नामको बेचता और स्वकन्याको बेचता है जहां अतिथि भोजन नहीं करते मेरी प्रिया उनके घरसे चली जाती है ॥ ३३ ॥

योविप्रःपुंश्चलीपुत्रोमहापापीचतत्पतिः ॥
पापिनोयागृहंयातिशूद्रश्राद्धान्नभोजकः ॥३४

भा०टी-जो ब्राह्मण पुंश्चलीका पुत्र है उसका पति महापापी है जो पापियोंके घर जाते हैं तथा जो शूद्रके श्राद्धान्नका भोजन करताहै ॥ ३४ ॥

महारुष्टाततोयातिमंदिरात्कमलालया ॥
शूद्राणांशवदाहीचभाग्यहीनोद्विजाधमः ३५॥

भा०टी०-उसके यहांसे लक्ष्मी रूठकर चली जातीहै जो शूद्रोंके शव जलाते हैं वह द्विजाधम भाग्यहीन है ३५

यातिरुष्टातद्गृहाच्चदेवाःकमलवासिनी ॥
शूद्राणांसूपकारीयोब्राह्मणोवृषवाहकः॥ ३६॥

भा० टी०-हे देवताओ ! उसके गृहसे लक्ष्मी कमलवासिनी चली जाती है जो ब्राह्मण होकर शूद्रोंका सूपकारी तथा जो ब्राह्मण वृषवाही है ॥ ३६ ॥

तत्तोयपानभीताचकमलायातितद्गृहात् ॥
अशुद्धहृदयःक्रूरोहिंसकोनिंदकोद्विजः ॥३७

भा०टी-उनके जलपानके भयसे भी उनके घरसे लक्ष्मी चली जाती है जिसका हृदय अशुद्ध क्रूर जो द्विज हिंसक और निन्दक है ॥ ३७ ॥

ब्राह्मणःशूद्रयाजीचयातिदेवीचतद्गृहात ॥
अवीरान्नंचयोभुंक्तेतस्माद्यातिजगत्प्रसूः३८॥

भा०टी०-तथा जो ब्राह्मण शूद्रयाजी है हे देवी ! उसके घरसे लक्ष्मी चली जाती है तथा जो अवीराका अन्न खाता है उसके घरसे लक्ष्मी चली जातीहै ॥ ३८॥

तृणंछिनत्तिनखैस्तैर्वायोविलिखेन्महीम् ॥
निराशोब्राह्मणोयत्रतद्गृहाद्यातिमत्प्रिया३९॥

भा०टी०-जो नखूनोंसे तृण छेदन करते वा उनसे

जो भूमिको लिखते हैं. जहांसे ब्राह्मण निराश चले जाते हैं उनके घरसे लक्ष्मी चली जाति है ॥ ३९ ॥

सूर्योदयेद्विजोभुंक्तेदिवास्वापीचब्राह्मणः ॥
दिवामैथुनकारीचयस्तस्माद्यातिमत्प्रिया ४०

भा०टी०—जो ब्राह्मण सूर्योदयमें भोजन करते हैं जो ब्राह्मण दिनमें शयन करते हैं तथा जो दिनमें मैथुन करतेहैं उनके घरसे लक्ष्मी चली जाती है ॥ ४० ॥

आचारहीनोविप्रोयोयश्चशूद्रप्रतिग्रही ॥
अदीक्षितोहियोमूढस्तस्माद्यातिमत्प्रिया ४१॥

भा०टी०—जो ब्राह्मण आचारहीन और शूद्रसे प्रतिग्रह लेता है जो मूढ अदीक्षित है उसके स्थानसे लक्ष्मी चली जाती है ॥ ४१ ॥

स्निग्धपादश्चनग्नोहियःशेतेज्ञानदुर्बलः ॥
शश्वद्वदतिवाचालोयातिसा[illegible]रसती ४२॥

भा०टी०—जो ज्ञानहीन गीले पैरसे नंगा [illegible] सोता

है तथा वाचाल और निरन्तर हँसता है उसके घरसे लक्ष्मी चली जातीहै ॥ ४२ ॥

शिरःस्नातस्तुतैलेनयोऽन्यांगंसमुपस्पृशेत् ॥
स्वांगेचवादयेद्वाद्यंरुष्टासायातितद्गृहात् ४३॥

भा०टी०-शिरसे तेलसे न्हाया हुआ जो दूसरेका अंग स्पर्श करै तथा जो अपने शरीरमें बाजा बजाता है उसके घरसे लक्ष्मी चली जाती है ॥ ४३ ॥

व्रतोपवासहीनोयःसंध्याहीनोऽशुचिर्द्विजः ॥
विष्णुभक्तिविहीनस्तुतस्माद्यातिचमत्प्रिया४४॥

भा०टी०-जो ब्राह्मण व्रतउपवाससे हीन और संध्यासे हीन अशुचि है तथा जो विष्णुभक्तिसे हीन है. उसके स्थानमें मेरी प्रिया नहीं रहती ॥ ४४ ॥

ब्राह्मणंनिंदयेद्योहितंचयोद्वेष्टिसंततम् ॥
जीवहिंसोदयाहीनोयातिसर्वप्रसूस्ततः॥४५॥

भा०टी०-जो ब्राह्मणकी निन्दा करता और निरन्तर

उनसे द्वेष करता है जो जीवहिंसक दयाहीन है उनके घरसे लक्ष्मी चली जाती है ॥ ४५ ॥

यत्रयत्रहरेरर्चाहरेरुत्कीर्तनंतथा ॥
तत्रातिष्ठातिसादेवीसर्वमंगलमंगला ॥ ४६ ॥

भा०टी०—जहां जहां हरिकी अर्चा और हरिका कीर्तन होता है वहाँ २ सर्वमंगला देवी निवास करती है ॥ ४६ ॥

यत्रप्रशंसाकृष्णस्यतद्भक्तस्यापितामह ॥
साचकृष्णप्रियादेवीतत्रातिष्ठातिसंततम् ४७॥

भा०टी०—हे पितामह ! जहाँ कृष्ण और उनके भक्तोंकी प्रशंसा है वहां कृष्णप्रिया देवी निरन्तर निवास करती है ॥ ४७ ॥

यत्रशंखध्वनिःशंखःशालाचतुलसीदलम् ॥
तत्सेवावंदनंध्यानंतत्रसापारीतिष्ठाति ॥ ४८॥

भा०टी०—जहां शंख,शंखध्वनि, शालिग्राम, तुलसी

दल तथा भगवान्की सेवा, वंदन, ध्यान है वहां कमला निवास करती है ॥ ४८ ॥

शिवलिंगार्चनंयत्रतस्यचोत्कीर्तनंशुभम् ॥
दुर्गार्चनंतद्गुणाश्चतत्रपद्मनिवासिनी ॥ ४९ ॥

भा०टी०–जहां शिवलिंगार्चन और उनका सुन्दर कीर्त्तन है तथा दुर्गाका अर्चन और उनके गुणोंका गान है वहां लक्ष्मी निवास करती है ॥ ४९ ॥

विप्राणांसेवनंयत्रतेषांचभोजनंशुभम् ॥
अर्चनंसर्वदेवानांतत्रपद्ममुखीसती ॥ ५० ॥

भा०टी०–जहां ब्राह्मणोंका सेवन और उनका भोजन है जहां सब देवोंका अर्चन है वहां लक्ष्मी निवास करती है ॥ ५० ॥

इत्युक्त्वाचसुरान्सर्वान्रमामाहरमापतिः ॥
क्षीरोदसागरेजन्मकलयाऽऽकलयेतिच ॥ ५१॥

भा०टी०–सब देवताओंसे ऐसा कहकर रमापतिने

लक्ष्मीसे कहा कि, तुम अपनी कलासे क्षीरसागरमें जन्म
लो ॥ ५१ ॥

इत्युक्त्वातांजगन्नाथोब्रह्माणंपुनराहच ॥
मथित्वासागरंलक्ष्मींदेवेभ्योदेहिपद्मज ॥ ५२ ॥

भा०टी०—जगन्नाथ इस प्रकार कहकर फिर ब्रह्मासे बोले कि, सागरसे लक्ष्मी मथन कर देवताओंको दो ५२॥

इत्युक्त्वाकमलाकांतोजगामांतःपुरं मुने ॥
देवाश्चिरेणकालेनययुःक्षीरोदसागरम् ॥ ५३ ॥

भा०टी०—हे मुने! कमलाकान्त यह कहकर अन्तः-पुरमें चले गये देवताभी तत्काल क्षीरसागरको गये ॥ ५३॥

मंथानंमंदरंकृत्वाकूर्मंकृत्वाचभाजनम् ॥
कृत्वाशेषंमंथपाशंममंथुरसुराःसुराः ॥ ५४ ॥

भा०टी०—कूर्मको भाजन कर और मंदरको मंथान करके और शेषको मंथपाश करके सुर असुरोंने सागरमंथन किया ॥ ५४ ॥

धन्वंतरिंचपीयूषमुच्चैःश्रवसमीप्सितम् ॥
नानारत्नंहास्तिरत्नंप्रापुर्लक्ष्मींसुदर्शनम् ॥ ५५ ॥

भा०टी०—धन्वन्तरि, अमृत, उच्चैःश्रवा, अनेक रत्न, ऐरावत हाथी, सुदर्शन, लक्ष्मी उसमेंसे निर्गत हुई॥ ५५॥

वनमालांददौसाचक्षीरोदशायिनेमुने ॥
सर्वेश्वरायरम्याय विष्णवेवैष्णवीसती ॥ ५६ ॥

भा०टी०—हे मुने ! उन्होंने क्षीरोदशायीके निमित्त वनमाला दी जो विष्णु सर्वेश्वर अति मनोहर हैं उनहींको वैष्णवी सतीने माला दी ॥ ५६ ॥

देवैःस्तुतापूजिताचब्रह्मणाशंकरेणच ॥
ददौदृष्टिंसुरगृहेब्रह्मशापविमोचनात् ॥ ५७ ॥

भा०टी०—फिर देवताओंसे स्तुतिको प्राप्त हो वह ब्रह्मा और शंकरसे पूजित हुई और ब्रह्माके शाप मुक्त होनेसे उन्होंने देवताओंके स्थानमें दृष्टि दी ॥ ५७ ॥

[illegible]त्यग्रस्तंभयंकरम् ॥
महालक्ष्मीप्रसादेनवरदानेननारद ॥ ५८ ॥

भा०टी०—तब हे नारद ! महालक्ष्मीके प्रसाद और वरदानसे देवताओंने दैत्योंसे भयंकर ग्रसित अपने विषय (राज्य) को पाया ॥ ५८ ॥

इत्येवंकथितंसर्वंलक्ष्म्युपाख्यानमुत्तमम् ॥
सुखदंसारभूतंचाकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ५९ ॥

इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेलक्ष्म्युपाख्याने तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

भा०टी०—यह सब तुमसे लक्ष्मीका उपाख्यान कहा यह सुखदायक सारभूत है अब आपकी क्या सुननेकी इच्छा है ॥ ५९ ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे श्रीमहालक्ष्म्युपाख्याने भाषाटीकायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चतुर्थोऽध्यायः ४.

नारदउवाच ॥

हरेरुत्कीर्तनंभद्रंश्रुतंतज्ज्ञानमुत्तमम् ॥
ईप्सितंलक्ष्म्युपाख्यानंध्यानंस्तोत्रंवदप्रभो ॥ १ ॥

भा०टी०—नारदजी बोले हे भगवन् ! हरिका उत्कीर्तन और उनका ज्ञान श्रवण किया और लक्ष्मीका उपाख्यान भी सुना. हे प्रभो अब उनका स्तोत्र कहिये १ ॥

नारायणउवाच ॥

स्नात्वातीर्थेपुराशक्रोधृत्वाधौतेचवाससी ॥
घटंसंस्थाप्यक्षीरोदेषड्देवान्पर्यपूजयत् ॥ २ ॥

भा०टी०—नारायण बोले इन्द्र तीर्थमें स्नानकर धुले वस्त्र पहरकर क्षीरसागरमें घट स्थापन कर छः देवताओंका पूजन करता हुआ ॥ २ ॥

गणेशंचदिनेशंचवह्निंविष्णुंशिवंशिवाम् ॥
एतान्भक्त्यासमभ्यर्च्यपुष्पगंधादिभिस्तदा ॥३॥

भा०टी०—गणेश, सूर्य, अग्नि, विष्णु, शिव, शिवा इनको भक्तिपूर्वक पुष्प गंधादिसे अर्चन कर ॥ ३ ॥

आवाह्यचमहालक्ष्मींपरमैश्वर्यरूपिणीम् ॥
पूजांचकारदेवेशोब्रह्मणाचपुरोधसा ॥ ४ ॥

भा०टी०—परमैश्वर्यरूपिणी लक्ष्मीका आवाहन कर

देवेश ब्रह्मा और अपने पुरोहितके सहित पूजा करते हुए ॥ ४ ॥

पुरःस्थितेषुमुनिषुब्राह्मणेषुगुरौहरौ ॥
देवादिषुसुदेशेचज्ञानानंदेशिवेमुने ॥ ५ ॥

भा०टी०–मुनि ब्राह्मण हरि गुरु इनके आगे स्थित होनेमें तथा ज्ञानानन्द शिव और देवादिके सुदेशमें स्थित होनेसे ॥ ५ ॥

पारिजातस्यपुष्पंचगृहित्वाचंदनोक्षितम् ॥
ध्यात्वादेवींमहालक्ष्मींपूजयामासनारद ॥ ६ ॥

भा०टी०–चन्दनसे सिक्त पारिजातका फूल ग्रहण करनेपर महालक्ष्मी देवीका ध्यान करके हे नारद! उनका पूजन किया ॥ ६ ॥

ध्यानंचसामवेदोक्तंयद्दत्तंब्रह्मणेपुरा ॥
हरिणातेनध्यानेनतन्निबोधवदामिते ॥ ७ ॥

भा०टी०–जो प्रथम ब्रह्माजीको हरिने सामवेदोक्त

लक्ष्मीका ध्यान कहा था वही ध्यान किया सुनिये मैं वह ध्यान आपसे कहता हूं ॥ ७ ॥

सहस्रदलपद्मस्थकर्णिकावासिनीपराम् ॥
शरत्पार्वणकोटींदुप्रभामुष्टिकरांपराम् ॥ ८ ॥

भा०टी०—सहस्रदल कमलकी कर्णिकामें निवास करनेवाली शरत्पूर्णिमाके कोटिचन्द्रकी प्रभाको तिरस्कार करनेवाली ॥ ८ ॥

स्वतेजसाप्रज्वलंतींसुखदृश्यांमनोहराम् ॥
प्रतप्तकांचननिभशोभांमूर्तिमतींसतीम् ॥ ९ ॥

भा०टी०—अपने तेजसे प्रज्वलित सुखदृश्या मनोहर तप्ते सुवर्णके समान शोभावाली मूर्तिमती सती ॥ ९ ॥

ईषद्धास्यप्रसन्नास्यांशश्वत्सुस्थिरयौवनाम् १० ॥

भा०टी०—रत्नभूषणोंकी शोभासे पूर्ण पीतवस्त्रसे शोभित कुछ हास्यसे प्रसन्नमुखी निरन्तर स्थित यौवनवाली ॥ १० ॥

सर्वसंपत्प्रदात्रींचमहालक्ष्मींभजेशुभाम् ॥
ध्यानेनाऽनेनतांध्यात्वानानागुणसमन्विताम् ॥११॥

भा०टी०—सब सम्पत्तिकी देनेवाली शुभ महालक्ष्मी-का भजन करता हूं इस ध्यानसे उन अनेक गुणसम्पन्नका ध्यान करके ॥ ११ ॥

संपूज्यब्रह्मवाक्येनचोपचाराणिषोडश ॥
ददौभक्त्याविधानेनप्रत्येकंमंत्रपूर्वकम् १२॥

भा०टी०—और सोलह उपचारसे ब्रह्मवाक्यसे पूजन कर प्रत्येक पदार्थको मंत्रपूर्वक भक्तिविधानसे दिया१२॥

प्रशस्तानिप्रकृष्टानिवराणिविविधानिच ॥
अमूल्यरत्नसारंचनिर्मितंविश्वकर्मणा ॥१३॥

भा०टी०—प्रशस्त और प्रकृष्ट अनेक प्रकारके श्रेष्ठ पदार्थ अमूल्य रत्नसार जो ब्रह्माजीके बनाये हैं ॥१३॥

आसनंचविचित्रंचमहालक्ष्मिप्रगृह्यताम् ॥
शुद्धंगंगोदकमिदंसर्ववंदितमीप्सितम् ॥१४॥

भा०टी०—और विचित्र आसन हे महालक्ष्मी ! ग्रहण करो और यह सबसे वंदित मनोहर शुद्ध गंगाजल है१४

पापेध्मवह्निरूपंचगृह्यतांकमलालये ॥
पुष्पचंदनदूर्वादिसंयुतंजाह्नवीजलम् ॥१५॥

भा० टी०—यह पापरूपी ईंधनके जलानेको अग्निरूप है. हे लक्ष्मी! इसको ग्रहण करो. यह पुष्प चंदन दूर्वादिसे संयुक्त जाह्नवीजल है ॥ १५ ॥

शंखगर्भस्थितंस्वर्घ्यंगृह्यतांपद्मवासिनि ॥
सुगंधिपुष्पतैलंचसुगंधामलकीफलम् ॥१६॥

भा०टी०—और इस शंखमें स्थित अर्घ्यको हे कमललोचनी! ग्रहण करो सुगंधित पुष्पका तेल और सुगंधित आमला ॥ १६ ॥

देहसौंदर्यबीजंचगृह्यतांश्रीहरेःप्रिये ॥
कार्पासजंचक्रमिजंवसनंदेविगृह्यताम् ॥१७॥

भा०टी०—हे हरिप्रिये! इस देहकी सुन्दरताके बीजको ग्रहण करो. हे देवी! यह सूती और रेशमी वस्त्र ग्रहण करो ॥ १७ ॥

रत्नस्वर्णविकारंचदेहभूषाविवर्धनम् ॥
शोभायैश्रीकरंरत्नभूषणंदेविगृह्यताम् ॥१८॥

भा०टी०—रत्न और सुवर्णके गहने देहकी शोभा बढानेवाले हैं यह श्रीकररत्न शोभाके निमित्त हैं हे देवि ! इनको ग्रहण करो ॥ १८ ॥

सर्वसौंदर्यबीजंचसद्यःशोभाकरंपरम् ॥
वृक्षानिर्यासरूपंचगंधद्रव्यादिसंयुतम् ॥ १९ ॥

भा०टी०—सम्पूर्ण सुन्दरताके बीज और सब शोभा करनेवाले वृक्षकी निर्यासरूप गंध ग्रहण करो ॥ १९ ॥

श्रीकृष्णकांतेधूपंचपवित्रंप्रतिगृह्यताम् ॥
सुगंधियुक्तंसुखदंचंदनंदेविगृह्यताम् ॥ २०॥

भा०टी०—हे कृष्णकांते ! यह पवित्र धूप ग्रहण करो यह सुगंधियुक्त सुखद चंदन है इसको ग्रहण करो॥ २०॥

जगच्चक्षुःस्वरूपंचपवित्रंतिमिरापहम् ॥
प्रदीपंसुस्वरूपंचगृह्यतांचसुरेश्वरि ॥ २१ ॥

भा०टी०—यह जगत्के चक्षुःस्वरूप पवित्र अंधकार-नाशक सुस्वरूप दीपक है हे सुरेश्वरि ! ग्रहण करो ॥२१॥

नानोपहाररूपंचनानारससमन्वितम् ॥
अतिस्वादुकरंचैवनैवेद्यंप्रतिगृह्यताम् ॥ २२ ॥

भा०टी०–अनेक उपहाररूप अनेक रससे सम्पन्न अतिस्वादिष्ट नैवेद्य ग्रहण करो ॥ २३ ॥

अन्नंब्रह्मस्वरूपंचप्राणरक्षणकारणम् ॥
तुष्टिदंपुष्टिदंचैवदेव्यन्नंप्रतिगृह्यताम् ॥ २३ ॥

भा०टी०–यह अन्न ब्रह्मस्वरूप प्राणरक्षणका कारण है, हे देवि ! इस तुष्टि और पुष्टि देनेवालेको ग्रहण करो २३

शाल्यन्नजंसुपक्वंचशर्कराग्व्यसंयुतम् ॥
स्वादुयुक्तंमहालक्ष्मिपरमान्नंप्रगृह्यताम् ॥ २४ ॥

भा०टी०–शालि अन्नसे बनाई खीर शर्करा और दूध घृतयुक्त है हे महालक्ष्मी ! यह परम स्वादिष्ठ है इसको ग्रहण करो ॥ २४ ॥

शर्करागव्यपक्वंचसस्वादुसुमनोहरम् ॥
मयानिवेदितंभक्त्यास्वास्तिकंप्रतिगृह्यताम् २५॥

भा०टी०-शर्करा दूधमें पक्व सुस्वादिष्ट मनोहर मेरा निवेदित यह स्वस्तिक अन्न ग्रहण करो ॥ २५ ॥

नानाविधानिरम्याणिपक्वान्नानिफलानिच ॥
सुरभिस्तनसंत्यक्तंसुस्वादुसुमनोहरम् ॥ २६ ॥

भा०टी०-और भी अनेक प्रकारके पक्व मधुर अन्न मनोहर सुरभीके स्तनसे निकला स्वादिष्ट ॥ २६ ॥

मर्त्यामृतंसुगव्यंचगृह्यतामच्युतप्रिये ॥
सुस्वादुरससंयुक्तमिक्षुवृक्षसमुद्भवम् ॥ २७ ॥

भा०टी०-मनुष्योंका अमृतस्वरूप दूध घृतादि हे अच्युतप्रिये ! ग्रहण करो अच्छे स्वादिष्ट रससे संयुक्त गन्नेके रससे प्रगट ॥ २७ ॥

अग्निपक्वमतिस्वादुगुडंचप्रतिगृह्यताम् ॥
यवगोधूमसस्यानांचूर्णरेणुसमुद्भवम् ॥ २८ ॥

भा०टी०-अग्निमें पक्व अति स्वादिष्ट गुण ग्रहण करो एव गोधूम सस्योंका चूर्ण ॥ २८ ॥

सुपक्वंगुडगव्याक्तंमिष्टान्नंदेविगृह्यताम् ॥
सस्यचूर्णोद्भवंपक्वंस्वस्तिकादिसमान्वितम् ॥ २९ ॥

भा०टी०—सुपक्व गुड और गव्यसे युक्त मिष्टान्न ग्रहण करो सस्यचूर्णोद्भव पक्व स्वस्तिकादिसे युक्त ॥ २९ ॥

मयानिवेदितंभक्त्यानैवेद्यंप्रतिगृह्यताम् ॥
शीतवायुप्रदंचैवदाहेचसुखदंपरम् ॥ ३० ॥

भा०टी०—यह मेरे दिये नैवेद्यको भक्तिपूर्वक ग्रहण करो शीतवायुका करनेवाला और दाहमेंभी परम सुखकारी ॥ ३० ॥

कमलेगृह्यतांदेवंव्यजनंश्वेतचामरम् ॥
तांबूलंचवरंरम्यंकर्पूरादिसुवासितम् ॥ ३१ ॥

भा०टी०—हे कमले देवि ! यह व्यजन और श्वेतचमर आप ग्रहण करो मनोहर ताम्बूल कर्पूरादिसे सुवासित ॥ ३१ ॥

जिह्वाजाड्यच्छेदकरंतांबूलंप्रतिगृह्यताम् ॥
सुवासितंसुशीतंचापिपासानाशकारणम् ॥ ३२ ॥

भा०टी०—जिह्वाकी जडताका छेदकारी ताम्बूल ग्रहण करो सुवासित सुशीतल प्यासका नाशक ॥ ३२ ॥

जगज्जीवनरूपंचजीवनंदेविगृह्यताम् ॥
देहसौंदर्यबीजंचसदाशोभाविवर्धनम् ॥ ३३ ॥

भा०टी०—जगत्का जीवनरूप जल हे देवि ! ग्रहण करो देहकी सुन्दरताका बीज सदा शोभाका बढाने-वाला ॥ ३३ ॥

कार्पासजंचकृमिजंवसनंदेविगृह्यताम् ॥
रत्नस्वर्णविकारंचदेहभूषादिवर्धनम् ॥ ३४ ॥

भा०टी०—कपास और रेशमी वस्त्र हे देवि ! ग्रहण करो यह स्वर्णविकार रत्न देहकी शोभा बढानेवाले॥ ३४॥

शोभाधारंश्रीकरंचभूषणंदेविगृह्यताम् ॥
नानाऋतुषुनिर्माणंबहुशोभाश्रयंपरम् ॥३५॥

भा०टी०—शोभाधारक श्रीकरभूषण हे देवि ! ग्रहण करो अनेक ऋतुओंमें निर्मित बहु शोभाकारी ॥ ३५ ॥

सुरभूपप्रियंशुद्धंमाल्यंदेविप्रगृह्यताम् ॥
शुद्धिदंशुद्धरूपंचसर्वमंगलमंगलम् ॥ ३६ ॥

भा०टी०—सुरभूपप्रियमाला हे देवी ! ग्रहण करो शुद्धिदायक शुद्धिरूप सब मंगलका मंगलरूप ॥ ३६ ॥

गंधवस्तूद्भवंरम्यंगंधंदेविप्रगृह्यताम् ॥
पुण्यतीर्थोदकंचैवविशुद्धंशुद्धिदंसदा ॥ ३७॥

भा०टी०—गन्ध वस्तुओंसे उत्पन्न परम मनोहर गंध हे देवि ! ग्रहण करो. पुण्यतीर्थ जल विशुद्ध और शुद्धिका देनेवाला है ॥ ३७ ॥

गृह्यतांकृष्णकांतेत्वंरम्यमाचमनीयकम् ॥
रत्नसारादिनिर्माणंपुष्पचंदनचर्चितम् ॥ ३८ ॥

भा०टी०—हे कृष्णकान्ते ! यह मनोहर आचमन ग्रहण करो रत्नसारादिसे निर्मित पुष्प चन्दनसे चर्चित ॥ ३८ ॥

वस्त्रभूषणभूषाढ्यसुतल्पंदेविगृह्यताम् ॥
यद्यद्द्रव्यमपूर्वंचपृथिव्यामपिदुर्लभम् ॥ ३९ ॥

भा०टी०—वस्त्र भूषणोंसे भूषित शय्याको ग्रहण करो जो जो द्रव्य अपूर्व है और पृथ्वीमें अपूर्व है ॥ ३९ ॥

देवभूषार्हभोग्यंचतद्द्रव्यंदेविगृह्यताम् ॥
द्रव्याण्येतानिदत्त्वाचमूलेनदेवपुंगवः ॥ ४० ॥

भा०टी०—देवभूषणके योग्य हे देवी! उन उन भूषणोंको ग्रहण करो. हे देवपुंगव! मूलमंत्रसे इन द्रव्योंको देकर ॥ ४० ॥

मूलंजजापभक्त्याचदशलक्षंविधानतः ॥
जपेनदशलक्षेणमंत्रसिद्धिर्बभूवह ॥ ४१ ॥

भा०टी०—विधिपूर्वक भक्तिसे दशलक्ष मंत्रका जप करै दशलाख जपसे मंत्रसिद्धि होती है ॥ ४१ ॥

मंत्रश्चब्रह्मणादत्तःकल्पवृक्षश्चसर्वतः ॥
लक्ष्मीमायाकामवाणीङेन्ताकमलवासिनी ॥४२॥

भा०टी०—ब्रह्माका दिया मंत्र सब प्रकार कल्पवृक्ष होता है लक्ष्मी श्रीबीज मायाबीज कामबीज वाणीबीज इनका उच्चारण कर चतुर्थीविभक्ति लगावै अर्थात् "कमलवासिन्यै स्वाहा" ॥ ४२ ॥

वैदिकोमंत्रराजोऽयंप्रसिद्धःस्वाहयाऽन्वितः ॥
कुबेरोऽनेनमंत्रेणपरमैश्वर्यमाप्तवान् ॥ ४३ ॥

भा०टी०—यह वैदिक मंत्रराज है और प्रसिद्ध है इसी मंत्रसे कुबेरने परमऐश्वर्य पाया था ॥ ४३ ॥

राजराजेश्वरोदक्षःसावर्णिर्मनुरेवच ॥
मंगलोऽनेनमंत्रेणसप्तद्वीपेऽवनीपतिः ॥ ४४ ॥

भा०टी०—राजराजेश्वर दक्ष सावर्णि मनु इसी मंगलदायक मंत्रसे सप्तद्वीपा वसुमतीके पति हुए ॥ ४४ ॥

प्रियव्रतोत्तानपादौकेदारोनृपएवच ॥
एतेसिद्धाश्चराजेंद्रामंत्रेणानेननारद ॥ ४५ ॥

भा० टी०—प्रियव्रत उत्तानपाद केदार नृपति हे नारद । यह राजेन्द्र इसी प्रभावसे सिद्ध थे ॥ ४५ ॥

सिद्धेमंत्रेमहालक्ष्मीःशक्रायदर्शनंददौ ॥
रत्नेंद्रसारनिर्माणविमानस्थावरप्रदा ॥ ४६ ॥

भा०टी०—मंत्रसिद्ध होनेपर महालक्ष्मीने इन्द्रको दर्शन

दिया वह वर देनेको रत्नोंके सारके सिंहासनपर स्थित होकर आई ॥ ४६ ॥

सप्तद्वीपवतींपृथ्वींछादयंतीत्विषाचया ॥
श्वेतचंपकवर्णाभारत्नभूषणभूषिता ॥ ४७ ॥

भा० टी०–जिनकी कान्तिसे सात द्वीपकी वसुमती आच्छादित होती थी वह श्वेतचम्पेके वर्णवाली रत्नभूषणोंसे भूषित ॥ ४७ ॥

ईषद्धास्यप्रसन्नास्याभक्तानुग्रहकातरा ॥
बिभ्रतीरत्नमालांचकोटिचंद्रसमप्रभाम् ॥ ४८ ॥

भा०टी०–कुछेक हास्यसे प्रसन्नमुखी भक्तोंके अनुग्रहसे कातर हुई कोटिचन्द्रमाके समान कांतिवाली ।को धारण करती ॥ ४८ ॥

दृष्ट्वाजगत्प्रसूंशांतांतुष्टावैतांपुरंदरः ॥
पुलकांचितसर्वांगः साश्रुनेत्रः कृतांजलिः॥४९॥

भा०टी०–जगन्माताका दर्शन कर इन्द्र उनको सतुष्ट करने लगे उनका सब अंग पुलकित नेत्रोंमें जल भरि आया हाथ जोडे ॥ ४९ ॥

ब्रह्मणाचप्रदत्तेनस्तोत्रराजेनसंयुतः ॥
सर्वाभीष्टप्रदैर्नववैदिकैनैवतत्रच ॥ ५० ॥

भा टी०—ब्रह्माके दिये स्तोत्रराज है उससे जो सर्वाभीष्ट प्रद वैदिक स्तुति करने लगे ॥ ५० ॥

पुरंदरउवाच ।

नमःकमलवासिन्यैनारायण्यैनमोनमः ॥
कृष्णप्रियायैसततंमहालक्ष्म्यैनमोनमः ॥ ५१ ॥

भा०टी०—इन्द्र बोले कमलवासिनी नारायणी कृष्ण-प्रिया महालक्ष्मीको निरन्तर नमस्कार है ॥ ५१ ॥

पद्मपत्रेक्षणायैचपद्मास्यायैनमोनमः ॥
पद्मासनायैपद्मिन्यैवैष्णव्यैचनमोनमः ॥ ५२ ॥

भा०टी०—कमललोचनी कमलमुखी पद्मासना पद्मि-नी वैष्णवीके निमित्त प्रणाम है ॥ ५२ ॥

सर्वसंपत्स्वरूपिण्यैसर्वाराध्यैनमोनमः ॥
हरिभक्तिप्रदात्र्यैचहर्षदात्र्यैनमोनमः ॥ ५३ ॥

भा०टी०—सर्व सम्पत्स्वरूपिणी सर्वाराधिनी हरिभक्ति और हर्षदायिनीको प्रणाम है ॥ ५३ ॥

कृष्णवक्षःस्थितायचकृष्णेशायैनमोनमः ॥
चंद्रशोभास्वरूपायैरत्नपद्मेचशोभने ॥ ५४ ॥

भा०टी०—कृष्णके वक्षःस्थलमें स्थित कृष्णेशी चन्द्रशोभास्वरूपिणी रत्नपद्मा शोभना ॥ ५४ ॥

संपत्त्यधिष्ठातृदेव्यैमहादेव्यैनमोनमः ॥
नमोवृद्धिस्वरूपायैवृद्धिदायैनमोनमः ॥ ५५ ॥

भा०टी०—सम्पत्तिकी अधिष्ठात्री देवी वृद्धिरूपा वृद्धिदायै को नित्य प्रणाम है ॥ ५५ ॥

वैकुंठेयामहालक्ष्मीर्यालक्ष्मीःक्षीरसागरे ॥
स्वर्गलक्ष्मीरिंद्रगेहेराजलक्ष्मीर्नृपालये ॥ ५६ ॥

भा०टी०—जो महालक्ष्मी वैकुंठ क्षीरसागर स्वर्ग इन्द्रके घरमें और राजोंके स्थानमें है ॥ ५६ ॥

गृहलक्ष्मीश्चगृहिणीगेहेचगृहदेवता ॥
सुरभिःसागरेजातादक्षिणायज्ञकामिनी ॥ ५७ ॥

भा०टी०–जो गृहस्थियोंके घरकी लक्ष्मी गृहदेवता है जो सागरमें प्रगट हुई सुरभी दक्षिणा और यज्ञकामिनी है ॥ ५७ ॥

अदितिर्देवमातात्वंकमलाकमलालया ॥
स्वाहात्वंचहविर्दानेकव्यदानेस्वधास्मृता ॥५८॥

भा०टी०–तुमही अदिति देवमाता कमला कमलालया हवि देनेमें स्वाहा औ कव्यदानमें स्वधा हो ॥५८॥

त्वंहिविष्णुस्वरूपाचसर्वाधारावसुंधरा ॥
शुद्धसत्वस्वरूपात्वंनारायणपरायणा ॥ ५९ ॥

भा०टी०–तुमही विष्णुस्वरूपिणी सर्वाधारा वसुंधरा हो शुद्धसत्वस्वरूपा नारायणपरायणी हो ॥ ५९ ॥

क्रोधहिंसावर्जिताचवरदाशारदाशुभा ॥
परमार्थप्रदात्वंचहरिदास्यप्रदापरा ॥ ६० ॥

भा०टी०–क्रोध हिंसासे वर्जित वरदायक शारदा

शुभा हो तुमही परमार्थदायिनी हरिका दासत्व देनेवाली हो ॥ ६० ॥

ययाविनाजगत्सर्वंभस्मीभूतमसारकम् ॥
जीवन्मृतंचविश्वंचशश्वत्सर्वंयथाविना ॥ ६१ ॥

भा०टी०—जिसके विना यह सब जगत् भस्मीभूत और असार है और जिसके विना यह सब विश्व जीता हुआही मृत है ॥ ६१ ॥

सर्वेषांचपरामातासर्वबांधवरूपिणी ॥
धर्मार्थकाममोक्षाणांत्वंचकारणरूपिणी ॥ ६२ ॥

भा०टी०—वह सबकी परामाता सबकी बंधुस्वरूपिणी तथा धर्म अर्थ काम मोक्षकी कारणरूपिणी तुमही हो ॥ ६२ ॥

यथामातास्तनांधानांशिशूनांशैशवेसदा ॥
तथात्वंसर्वदामातासर्वेषांसर्वरूपतः ॥ ६३ ॥

भा०टी०—जिस प्रकार माता दूध पीनेवाले बालकोंकी रक्षा करती है हे माता ! इसी प्रकार तुम सबकी सर्वरूपसे रक्षा करती हो ॥ ६३ ॥

मातृहीनःस्तनांधस्तुसचजीवतिदैवतः ॥
त्वयाहीनोजनःकोऽपिनजीवत्येवनिश्चितम् ६४॥

भा०टी०—चाहे मातासे पृथक् हुआ दुधारी बालक दैववश जीवित होजाय परन्तु तुम्हारे विना कोई जीवित नहीं रहसकता यह सत्य है ॥ ६४ ॥

सुप्रसन्नःस्वरूपात्वंमांप्रसन्नाभवांबिके ॥
वैरिग्रस्तंचविषयंदेहिमह्यंसनातनि ॥ ६५ ॥

भा०टी०—हे अम्बिके ! प्रसन्नस्वरूपिणी तुम हमसे प्रसन्न हो हे सनातनि ! हमारे वैरियोंके ग्रसे देशको हमें दीजिये ॥ ६५ ॥

अहंयावत्त्वयाहीनोबंधुहीनश्चभिक्षुकः ॥
सर्वसंपद्विहीनश्चतावदेवहरिप्रिये ॥ ६६

भा०टी०—जबतक मैं तुमसे हीन हूं तबतक बंधुहीन भिक्षुक हूं हे हरिप्रिये ! तबहीतक सब सम्पत्तिसे हीन हूं ॥ ६६ ॥

ज्ञानंदेहिचधर्मंचसर्वसौभाग्यमीप्सितम् ॥
प्रभावंचप्रतापंचसर्वाधिकारमेवच ॥ ६७ ॥

भा०टी०—ज्ञान धर्म और ईप्सित सौभाग्य मुझको दीजिये प्रभाव प्रताप और सब अधिकार दीजिये ॥ ६७॥

जयंपराक्रमंयुद्धेपरमैश्वर्यमेवच ॥
इत्युक्त्वाचमहेंद्रश्चसर्वैःसुरगणैःसह ॥ ६८ ॥

भा०टी०—युद्धमें जय पराक्रम तथा परम ऐश्वर्य दो ऐसा कहकर महेन्द्रने सब देवताओंके साहित ॥ ६८ ॥

प्रणनामसाश्रुनेत्रोमूर्धांचैवपुनःपुनः ॥
ब्रह्माचशंकरश्चैवशेषोधर्मश्चकेशवः ॥ ६९ ॥

भा०टी०—नेत्रोंमें जल भर वारंवार शिरसे प्रणाम किया ब्रह्मा शंकर शेष धर्म केशव ॥ ६९ ॥

सर्वेचक्रुःपरीहारंसुरार्थेचपुनःपुनः ॥
देवेभ्यश्चवरंदत्त्वापुष्पमालांमनोहराम् ॥ ७० ॥

भा०टी०—यह सबही देवताओंके निमित्त प्रार्थना करते हुए सब देवताओंके वर और मनोहर पुष्पमाला७०

केशवायददौलक्ष्मीःसंतुष्टासुरसंसदि ॥
ययुःसर्वाश्चसंतुष्टाःस्वंस्वंस्थानंचनारद ॥७१॥

भा०टी०–संतुष्ट होकर देवताओंकी सभामें केशवको देती हुई हे नारद ! तब सम्पूर्ण देवता संतुष्ट हो अपने २ स्थानको गये ॥ ७१ ॥

देवीययौहरेःस्थानंहृष्टाक्षीरोदशायिनः ॥
ययतुश्चैवस्वगृहंब्रह्मेशानौचनारद ॥ ७२ ॥

भा०टी०–और देवीभी प्रसन्न हो क्षीरोदशायीके स्थानको गई. हे नारद ! ब्रह्मा और शिवभी अपने स्थानोंको गये ॥ ७२ ॥

दत्त्वाशुभाशिषंतौचदेवेभ्यःप्रीतिपूर्वकम् ॥
इदंस्तोत्रंमहापुण्यंत्रिसंध्यंयःपठेन्नरः ॥७३॥

भा०टी०–यह दोनों प्रेमसे देवताओंके शुभ आशीर्वाद देकर गये इस महापवित्र स्तोत्रको जो तीनों संध्याओंमें पढता है ॥ ७३ ॥

कुबेरतुल्यःसभवेद्राजराजेश्वरोमहान् ॥
पंचलक्षजपेनैवस्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम् ॥७४॥

भा०टी०–वह कुबेरतुल्य महान् राजराजेश्वर होता है पांचलाख जपनेसे मनुष्योंके स्तोत्रसिद्धि होजाती है ७४

सिद्धस्तोत्रंयदिपठेन्मासमेकंतुसंततम् ॥
महासुखीचराजेंद्रोभविष्यतिनसंशयः॥७५॥

इतिश्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे श्रीमहालक्ष्म्युपाख्याने चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

भा०टी०–इस सिद्धिस्तोत्रको जो एक मास निरन्तर पाठ करताहै वह राजेन्द्र महासुखी होगा इसमें सन्देह नहीं ॥ ७५ ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे श्रीमहालक्ष्म्युपाख्याने भाषटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस, कल्याण-मुंबई.
खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाडी-मुंबई.